सत्यमेव जयते

महानिदेशक लेखा परीक्षा, (केंद्रीय)
का कार्यालय, महाराष्ट्र, मुंबई - 400 051

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सह्याद्रि

36 वाँ अंक वर्ष 2023

ऑडिट दिवस समारोह की झलकियाँ

वर्ष 2023 अंक 36 वाँ

सत्यमेव जयते

सह्याद्रि

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय

सी-25, ऑडिट भवन, बांद्रा - कुर्ला संकुल, बांद्रा (पूर्व), मुंबई - 51.

मुखपृष्ठ

इस अंक में रचयिताओं द्वारा किये गए विचार उनके अपने हैं । संपादक मंडल का उनसे सहमत या असहमत होना आवश्यक नहीं है। विचारों व लेखन की मौलिकता संबंधित पूर्ण जिम्मेदारी रचनाकार की स्वयं की है। रचना / आलेखों के संपादन एवं प्रकाशन संबंधी सर्वाधिकार संपादक मंडल में निहित होंगे।

सह्याद्रि परिवार

संरक्षक

श्री. के. पी. यादव

महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), मुंम्बई

प्रकाशन

सह्याद्रि (हिन्दी पत्रिका 36 वां अंक)

प्रकाशक

महानिदेशक लेखापरीक्षा, (केंद्रीय) का कार्यालय, मुम्बई - 400 051, महाराष्ट्र

प्रधान संपादक
श्री.पद्माकर कुशवाहा
निदेशक

मुख्य संपादक
सुश्री पूर्णिमा. एस.
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

संपादक
श्री.रणजीत सिंह
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

संपादक मंडल

सुश्री वाणी विशालाक्षी
वरिष्ठ अनुवादक

सुश्री.बिना कुमारी राय
कनिष्ठ अनुवादक

"पत्रिका में व्यक्त विचार लेखक के अपने हैं। अतः संपादक मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है।"

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय		पृ.क्र.
1.	ऑडिट दिवस की झलकियाँ		1
2.	सह्याद्रि अंक		2
3.	सह्याद्रि परिवार		3
4.	अनुक्रमणिका		4 - 5
5.	संरक्षक की कलम से		6
6.	प्रधान संपादक की कलम से		7
7.	आपके पत्र		8 - 9
	रचनाएँ	**रचनाकार**	
8.	डाटा अभियान	श्री केरल प्रसाद यादव / महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय)	10 - 13
9.	नए साल आते हैं	सुश्री नविता यादव	14
10.	मैं धरती हूँ	श्री राहुल कुमार वर्मा / कनिष्ठ हिंदी अनुवादक	15
11.	लेखापरीक्षा प्रतिवेदन	श्री अल्ताफ अली / सलाहकार	16 - 18
12.	गणतंत्र दिवस 2023 की झलकियां		19
13.	विलय और अधिग्रहण विषय पर आयोजित कार्यशाला की झलकियाँ		20
14.	अंतर्राष्ट्रीय कर पर आयोजित कार्यशाला की झलकियाँ		21
15.	जिंदगी की किताब के एक पन्ने से	सुश्री संगीता सिंह	22 - 23
16.	चित्रकला	कुमारी अंजलि, भतीजी सुश्री बिना राय / कनिष्ठ अनुवादक	23
17.	मेरा प्यारा घर	डॉ. पप्पू प्रसाद शाह (प्रसाद)	24
18.	थोड़ा वक्त दो मुझे	डॉ. पप्पू प्रसाद शाह (प्रसाद)	25 - 26
19.	चित्रकला	कुमारी अंजलि, भतीजी सुश्री बिना राय / कनिष्ठ अनुवादक	26
20.	भगवान का बगीचा (मॉलिंनॉन्ग गांव)	श्री हेमंत, डी. ई. ओ.	27
21.	श्रेष्ठता प्रमाण पत्र एवं नकद पुरस्कार वितरण समारोह की झलकियाँ		28
22.	हिंदी भाषा से संबंधित कुछ रोचक जानकारियाँ	श्री कुमार सौरभ / लेखापरीक्षक	29
23.	हिंदी-तमिल मिलाप	सुश्री वाणी विशालाक्षी / वरिष्ठ अनुवादक	30 - 32
24.	चित्रकला	कुमारी वृंदा मधु, भतीजी सुश्री वाणी विशालाक्षी / वरिष्ठ अनुवादक	32
25.	सावन	श्री रजनीश वर्मा / वरिष्ठ लेखापरीक्षक	33 - 34
26.	दोस्त	श्रीमती नंदिता आ. शिवशरण / सहायक पर्यवेक्षक	35
27.	कार्यालय में आयोजित चिकित्सा शिविर की झलकियाँ		36
28.	यौनशोषण अधिनियम विषय पर आयोजित कार्यशाला की झलकियाँ		37
29.	सतर्कता जागरूकता विषय पर आयोजित कार्यशाला की झलकियाँ		38
30.	एक सफल कोशिश	श्रीमती नंदिता आ. शिवशरण / सहायक पर्यवेक्षक	39

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय		पृ.क्र.
31.	भारत के संविधान के अंतर्गत स्वतंत्रता का अधिकार	श्री राकेश कुमार सिंह / सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी	40 - 43
32.	चित्रकला	कुमारी वृंदा मधु, भतीजी सुश्री वाणी विशालाक्षी / वरिष्ठ अनुवादक	43
33.	एक था राजू (भावपूर्ण श्रद्धांजलि)	श्री अंकुश आत्माराम बने / वरिष्ठ लेखापरीक्षक	44
34.	मन की व्यथा	श्री रजनीश वर्मा / वरिष्ठ लेखापरीक्षक	45
35.	सफर	श्री रजनीश वर्मा / वरिष्ठ लेखापरीक्षक	46 - 49
36.	बीबी का मक़बरा	सुश्री श्रीलता एस.एम. / वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	50
37.	ऑडिट दिवस पर पुरस्कार प्राप्त करते हुए प्रतिभागीगण		51
37.	हिंदी पखवाडा-2022 के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं की झलकियाँ		52 - 53
38.	हिंदी पखवाडा-2022 समापन समारोह की झलकियाँ		54

संरक्षक की कलम से

इस कार्यालय की हिंदी पत्रिका सह्याद्रि के 36 वें ई-अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है।

सह्याद्रि पत्रिका का प्रकाशन कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों का राजभाषा हिंदी के प्रति प्रेम एवं कर्तव्यनिष्ठा को दर्शाता है।

कार्यालय हिंदी पत्रिका राजभाषा हिंदी में विशेष रूचि रखने वाले सभी कार्मिको को राजभाषा हिंदी में उनके कौशल की प्रस्तुति करने का सर्वोत्तम साधन है अतः पत्रिका के प्रकाशन का उद्देश्य केवल राजभाषा के प्रयोग एवं प्रचार को प्रोत्साहन देना ही नहीं अपितु साहित्यिक सृजनशील कार्मिको को उनकी रचनाओं की प्रस्तुति का उपयुक्त मंच प्रदान करना भी है।

पत्रिका के 36 वें अंक के कुशल संपादन हेतु संपादक मंडल एवं सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। मैं पत्रिका की उतरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ और आशा करता हूँ कि आप सभी अपने कर्तव्यों का समुचित पालन करते हुए अपनी अभिव्यक्ति को इस पत्रिका के माध्यम से नवीन आयाम प्रस्तुत करते रहेंगे।

के.पी.यादव
महानिदेशक

प्रधान संपादक की कलम से

कार्यालय की गृह हिंदी पत्रिका "सह्याद्रि" के 36 वें ई-संस्करण के प्रकाशन पर मुझे अत्यंत गौरव एवं हर्ष का अनुभव हो रहा है।

विभागाधीन कार्यालयों के कार्मिकों की सृजनात्मकता को पल्लवित करने में तथा हिंदी के प्रचार-प्रसार में कार्यालय की हिंदी पत्रिकाओं का बहुत बड़ा योगदान है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन का कारण इस कार्यालय के कार्मिको की रचनात्मकता एवं उनका तत्परता से दिया गया योगदान है। साथ ही यह राजभाषा हिंदी के प्रति उनकी विशेष रूचि को दर्शाता है।

पत्रिका के सफल संपादन हेतु मैं संपादक मंडल, सभी रचनाकारों एवं प्रकाशन में योगदान देने वाले सभी कार्मिकों को हृदय से धन्यवाद देता हूँ। मुझे पूर्ण विश्वाश है कि इस पत्रिका से प्रेरित होकर अधिकाधिक पाठक हिंदी की ओर प्रवृत्त होंगे।

पत्रिका की उतरोत्तर सफलता की उज्ज्वल कामनाओं सहित।

पद्माकर कुशवाहा
निदेशक

आपके पत्र

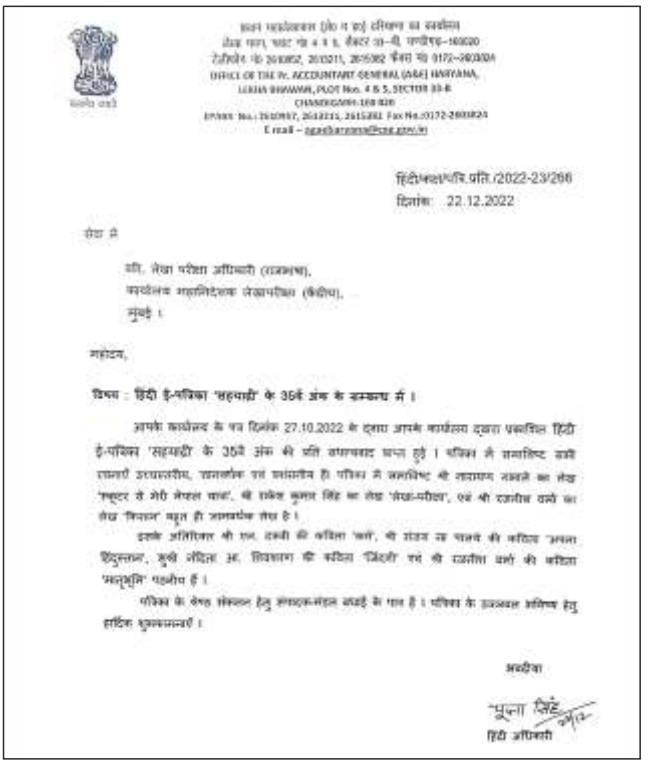

OFFICE OF THE Pr. ACCOUNTANT GENERAL (A&E) HARYANA,
LEKHA BHAWAN, PLOT Nos. 4 & 5, SECTOR 33-B
CHANDIGARH-160 020

हिंदी/कक्ष/पत्रि.प्रति./2022-23/266
दिनांक: 22.12.2022

सेवा में

वरि. लेखा परीक्षा अधिकारी (राजभाषा),
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय),
मुंबई ।

महोदय,

विषय : हिंदी ई-पत्रिका 'सह्याद्री' के 35वें अंक के सम्बन्ध में ।

आपके कार्यालय के पत्र दिनांक 27.10.2022 के द्वारा आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी ई-पत्रिका 'सह्याद्री' के 35वें अंक की प्रति धन्यवाद प्राप्त हुई । पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्साहवर्धक, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में सम्मिलित श्री ... का लेख ..., श्री राकेश कुमार सिंह का लेख 'लेखा-परीक्षा', एवं श्री रजनीश वर्मा का लेख 'किसान' बहुत ही ज्ञानवर्धक लेख है ।

इसके अतिरिक्त श्री ... की कविता ..., श्री ... की कविता ..., सुश्री नंदिता अ. शिवशरण की कविता 'जिंदगी' एवं श्री रजनीश वर्मा की कविता 'मातृभूमि' पठनीय हैं ।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक-मंडल बधाई के पात्र हैं । पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ ।

भवदीया

(पूजा सिंह)
हिंदी अधिकारी

भारतीय लेखा परीक्षा और लेखा विभाग
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF AUDIT
पूर्वोत्तर सीमांत रेल, मालीगांव, गुवाहाटी
NORTHEAST FRONTIER RAILWAY, MALIGAON, GUWAHATI

संख्या: 3/10-4/2014/62 (पत्रिका)
दिनांक: 16/12/2022

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्ष,
महानिदेशक लेखापरीक्षा केन्द्रीय का कार्यालय
सी -25, ऑडिट भवन, बांद्रा-कुर्ला संकुल
मुंबई- 400051

विषय: हिंदी पत्रिका 'सह्याद्री' के 35वें अंक की ई-प्रति की पावती

महोदया/महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'सह्याद्री' के 35वें अंक ई-प्रति की प्राप्ति हुई। पत्रिका की सभी रचनाएँ प्रभावशाली एवं ज्ञानवर्धक हैं। इसमें श्रीमती नंदिता अ. शिवशरण की 'जिंदगी' एवं ..., श्री रजनीश वर्मा की 'किसान', तथा श्री राकेश कुमार सिंह की 'लेखा परीक्षा' आदि रचनाएं विशेष रूप से ज्ञानवर्धक व रुचिकर हैं। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए सभी रचनाकारों तथा संपादक मंडल के सदस्यों को हार्दिक बधाई।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

भवदीया

(मिरीना सिमते)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशा.)

कार्यालय महालेखाकार (लेप व ह)-II, महाराष्ट्र
सिविल लाईन्स, नागपुर-440001
THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E) II MAHARASHTRA
CIVIL LINES, NAGPUR 440 001

आज़ादी का अमृत महोत्सव

रा.भा.अ./2022/जा.क्र.-
दिनांक : 28/11/2022

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा),
महानिदेशक लेखापरीक्षा केन्द्रीय का कार्यालय,
सी-25, ऑडिट भवन, बांद्रा कुर्ला संकुल,
बांद्रा (पूर्व), मुंबई-400051

महोदय/महोदया,

इस कार्यालय में आपके कार्यालय की वार्षिक राजभाषा हिन्दी ई-गृह पत्रिका 'सह्याद्री' का 35वां अंक प्राप्त हुई है, सहर्ष धन्यवाद । पत्रिका का मुख पृष्ठ व साज-सज्जा खूबसूरत व मनमोहक है। पत्रिका का बाहरी व भीतरी साज-सज्जा पत्रिका को विशिष्ट बना रहे हैं। पत्रिका में समाहित सभी रचनाओं में रचनात्मक, सकारात्मक एवं नवीन विचारों की छवि प्रतिबिंबित होती है।

कार्यालय में सम्पन्न विभिन्न गतिविधियों के छायाचित्रों से पत्रिका की शोभा बढ़ी है। पत्रिका के माध्यम से आपके कार्यालय में राजभाषा हिन्दी की दशा व दिशा में सकारात्मक प्रयास परिलक्षित होते।

पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटी बनाने के लिये रचनाकारों को एवं संपादक मण्डल को बधाई एवं पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं ।

वरिष्ठ लेखाअधिकारी
राजभाषा अनुभाग

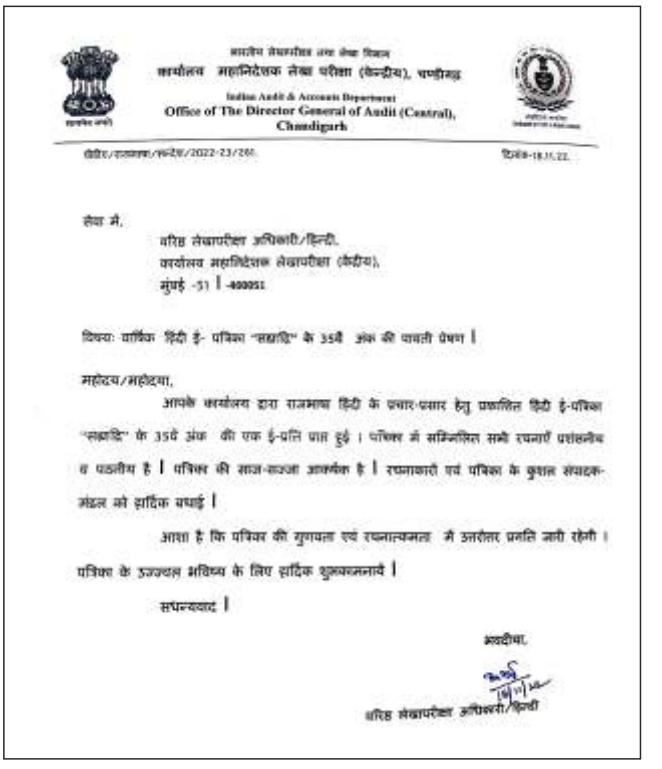

भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग
कार्यालय महानिदेशक लेखा परीक्षा (केन्द्रीय), चण्डीगढ़
Indian Audit & Accounts Department
Office of The Director General of Audit (Central),
Chandigarh

डीजीए/राजभाषा/संदेश/2022-23/261
दिनांक-18.11.22

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी,
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय),
मुंबई -51 । -400051

विषय: वार्षिक हिंदी ई- पत्रिका "सह्याद्रि" के 35वें अंक की पावती प्रेषण ।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित हिंदी ई-पत्रिका "सह्याद्रि" के 35वें अंक की एक ई-प्रति प्राप्त हुई । पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ प्रशंसनीय व पठनीय है । पत्रिका की साज-सज्जा आकर्षक है । रचनाकारों एवं पत्रिका के कुशल संपादक-मंडल को हार्दिक बधाई ।

आशा है कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी । पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनायें ।

सधन्यवाद ।

भवदीया,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी

आपके पत्र

भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग
कार्यालय महालेखाकार (ले एवं हक)
तमिलनाडु, चेन्नई-18
दूरभाष: 044-24324530 फैक्स: 044-24328562
Website : www.agae.tn.nic.in

INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E),
TAMILNADU,
361, ANNA SALAI, CHENNAI-18
Phone: 044-24324530 Fax: 044-24328562
Website : www.agae.tn.nic.in

हिन्दी कक्ष/हिन्दी गृह पत्रिका विविध 3 / 3265/38 — दिनांक 16/11/2022

सेवा में, वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी (राजभाषा) महानिदेशक लेखा परीक्षा केंद्रीय का कार्यालय सी-25 ऑडिट भवन, बांद्रा, कुर्ला बांद्रा (पूर्व) मुंबई - 400051	To, Senior Audit Officer (Official Language) Office of the Director General Audit Central C-25 Audit Bhawan, Bandra, Kurla Bandra (East) Mumbai – 400051

विषय: आपकी हिंदी गृह पत्रिका "सह्याद्रि" का 35 वां अंक की पावती के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय की पत्रिका "सह्याद्रि" का 35 वां अंक प्राप्त हुआ। इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। ये अंक अपने कलेवर, साज- सज्जा, मुद्रण स्पष्टता के कारण बहुत ही आकर्षक और मनोहारी बन पड़ा है। पत्रिका में सम्मिलित सामग्री उच्च स्तर की है। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में एक सराहनीय प्रयास है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ उच्च कोटि की अत्यंत रोचक, ज्ञानवर्द्धक, मनोरंजक, पठनीय एवं सराहनीय है। इस अंक में प्रकाशित **श्रीमती नंदिता शिवरामन द्वारा लिखित कविताएं "वक्त नहीं", "जिंदगी", श्री संजय ना पालवे द्वारा लिखित "अपना हिंदुस्तान है", सुश्री मधु सिंह द्वारा लिखित "माँ और मेरी चाय" और श्री नारायण नभाले द्वारा लिखित "स्कूटर से मेरी नेपाल यात्रा" विशेष रूप से उल्लेखनीय है।** राजभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार में विभागीय रचनाकारों को उत्कृष्ट सृजनात्मक मंच प्रदान करने में आपकी इस पत्रिका की भूमिका महत्वपूर्ण बन रही है। यह बहुत ही सकारात्मक प्रयास है। पत्रिका भविष्य में और बेहतर करे यही कामना है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय
(हस्ताक्षर)
(एस.सुधाकरन)
वरिष्ठ लेखा अधिकारी(हिंदी)

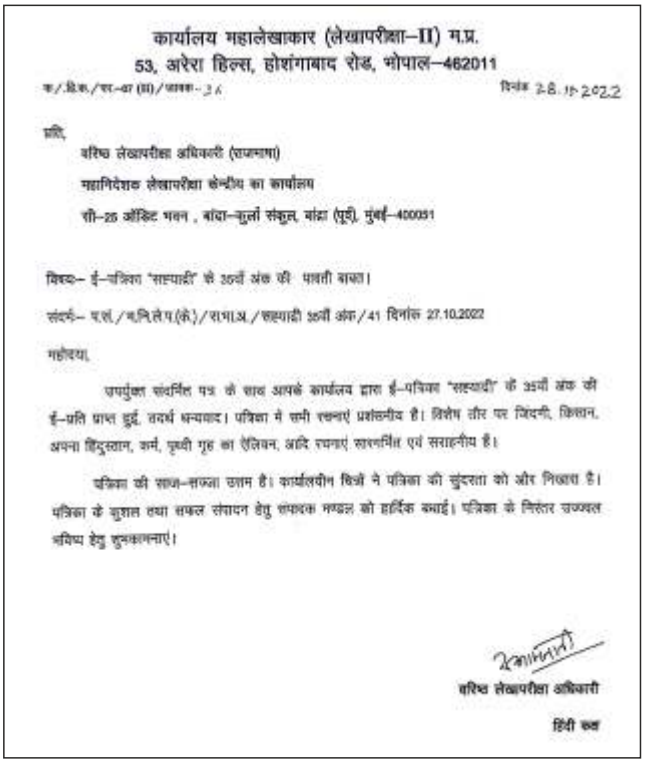

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा–II) म.प्र.
53, अरेरा हिल्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल–462011

क्र./हि.क./पत्र-47 (II)/जावक- 36 — दिनांक 28.11.2022

प्रति,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)
महानिदेशक लेखापरीक्षा केन्द्रीय का कार्यालय
सी–25 ऑडिट भवन , बांद्रा–कुर्ला संकुल, बांद्रा (पूर्व), मुंबई–400051

विषय– ई–पत्रिका "सह्याद्री" के 35वीं अंक की पावती बाबत।

संदर्भ– प.सं./म.नि.ले.प.(के)/रा.भा.अ./सह्याद्री 35वीं अंक/41 दिनांक 27.10.2022

महोदय,

उपर्युक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा ई–पत्रिका "सह्याद्री" के 35वीं अंक की ई–प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में सभी रचनाएं प्रशंसनीय हैं। विशेष तौर पर जिंदगी, किसान, अपना हिंदुस्तान, कर्म, पृथ्वी गृह का ऐलियन, आदि रचनाएं सारगर्भित एवं सराहनीय हैं।

पत्रिका की साज–सज्जा उत्तम है। कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं।

(हस्ताक्षर)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
हिंदी कक्ष

कार्यालय महालेखाकार,लेखापरीक्षा-II
पश्चिम बंगाल
OFFICE OF THE ACCOUNTANT
GENERAL, AUDIT-II , WEST BENGAL

संख्या :- हिंदी कक्ष/पत्रिका पावती/ 45 — दिनांक:-08/12/2022
DEC 2022

सेवा में,
व.ले.प.अ.(राजभाषा)
महानिदेशक लेखापरीक्षा, (केन्द्रीय) का कार्यालय,
महाराष्ट्र, मुंबई- 400051

विषय: हिंदी गृह पत्रिका "सह्याद्रि " के 35वें अंक के प्रेषण के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका "सह्याद्रि" के 35वें अंक की प्राप्ति हुई। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक है। साथ-ही पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षक है। कविताएं एवं लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाले है। इनमें से जो रचनाएँ अति उत्तम लगी, वो है- किसान, सृष्टि, पृथ्वी ग्रह का एलियन, स्कूटर से मेरी नेपाल यात्रा आदि।

आशा करता हूं कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंको के लिये बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

भवदीय,
(हस्ताक्षर)
व. लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्ष

सी.जी.ओ कॉम्प्लेक्स, डी.एफ ब्लॉक, सॉल्ट लेक, 5 वां तल, कोलकाता - 700064
3rd MSO Building, 5th Floor, CGO Complex, DF Block, Salt Lake, Kolkata – 700 064
Phone : (033) 2358-6886/92; FAX : (033) 2337-6966, E-mail:agauwestbengal2@cag.gov.in

---

1266

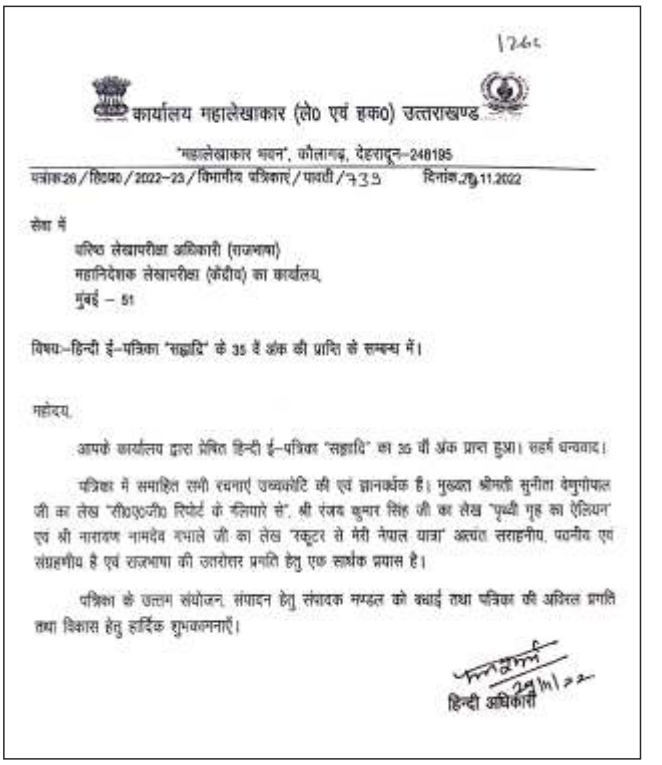

कार्यालय महालेखाकार (ले0 एवं हक0) उत्तराखण्ड
'महालेखाकार भवन', कौलागढ़, देहरादून–248195

पत्रांक28 / हि0प्र0 / 2022–23 / विभागीय पत्रिकाएं / पावती / 433 — दिनांक 29.11.2022

सेवा में

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)
महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय,
मुंबई – 51

विषय:–हिन्दी ई–पत्रिका 'सह्याद्रि' के 35 वें अंक की प्राप्ति के सम्बन्ध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी ई–पत्रिका 'सह्याद्रि' का 35 वाँ अंक प्राप्त हुआ। सहर्ष धन्यवाद।

पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्चकोटि की एवं ज्ञानवर्धक हैं। मुख्यतः श्रीमती सुनीता वेणुगोपाल जी का लेख 'सी0ए0जी0 रिपोर्ट के गलियारे से', श्री रंजय कुमार सिंह जी का लेख 'पृथ्वी गृह का ऐलियन' एवं श्री नारायण नामदेव नभाले जी का लेख 'स्कूटर से मेरी नेपाल यात्रा' अत्यंत सराहनीय, पठनीय एवं संग्रहणीय है एवं राजभाषा की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु एक सार्थक प्रयास है।

पत्रिका के उत्तम संयोजन, संपादन हेतु संपादक मण्डल को बधाई तथा पत्रिका की अविरल प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

(हस्ताक्षर) 29/11/22
हिन्दी अधिकारी

डाटा अभियान

आज विश्व मंदी के दौर से गुजर रहा है। इस मंदी के कारण वैश्विक स्तर पर भय एवं अवसाद का वातावरण है। परंतु इस वैश्विक मंदी के वातावरण में भारत की जी.डी.पी ग्रोथ प्रबल रही है । अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के अनुमानानुसार जहाँ विश्व की जी.डी.पी विकास दर 2022 में 3.2 प्रतिशत थी , वह 2023 में 2.7 प्रतिशत हो जाएगी , जबकि भारत की जी.डी.पी ग्रोथ 6.8 प्रतिशत (वर्ष 2022) से घटकर वर्ष 2023 में 6.1 प्रतिशत हो जाएगी। विश्व के विभिन्न संगठनों के अनुमानानुसार, भारतीय विकास दर 7 प्रतिशत के आसपास रहने की संभावना है।

श्री के.पी. यादव
महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय)

(क) मंदी के समय में वैश्विक विकास दर

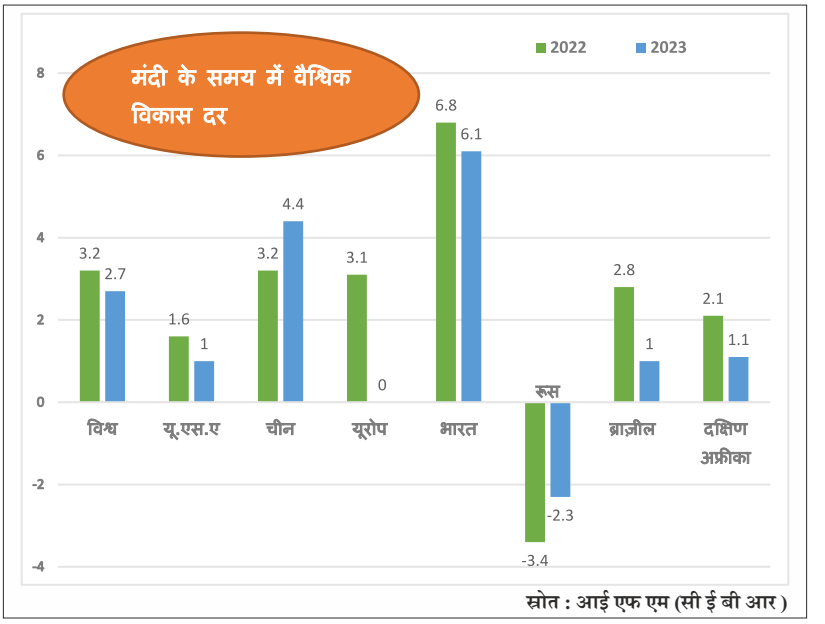

स्रोत : आई एफ एम (सी ई बी आर)

(ख) विभिन्न संगठनों के अनुसार विकास का अनुमान

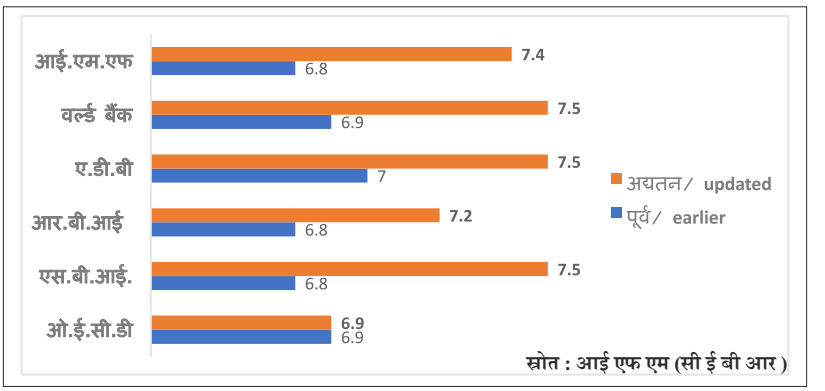

स्रोत : आई एफ एम (सी ई बी आर)

निर्यात में बढोत्तरी एवं आयात निर्भरता में कमी भारतीय अंतरराष्ट्रीय व्यापार का एक प्रमुख लक्ष्य रहा है। इस दिशा में सरकार ने कई आवश्यक कदम उठाएँ हैं तथा कुछ क्षेत्रों में निर्यात में बढोत्तरी हुई हैं। पिछले दशक में इलेक्ट्रॉनिक्स निर्यात में 1.9 गुना बढोत्तरी हुई हैं। जहाँ वर्ष 2012-13 में इलेक्ट्रॉनिक्स निर्यात 10.9 बिलियन डॉलर था वहीं वर्ष 2021-22 में 20.2 बिलियन डॉलर हो गया। लेकिन इसके साथ-साथ आयात में उल्लेखनीय वृध्दि हुई जिसके कारण इलेक्ट्रॉनिक्स क्षेत्र में व्यापार घाटा (ट्रेड डेफिसिट) बढ़ा है। मोबाइल फोन के क्षेत्र में कहानी कुछ अलग ही है। डाटा विश्लेषण के अनुसार भारत में मोबाइल फोन का निर्यात जहाँ वर्ष 2012-13 में 2.7 बिलियन डॉलर था वह वर्ष 2022 में 4.8 बिलियन डॉलर हो गया। अत: मोबाइल निर्यात में दुगुनी वृध्दि हुई है।

(ग) अंतरराष्ट्रीय -व्यापार :

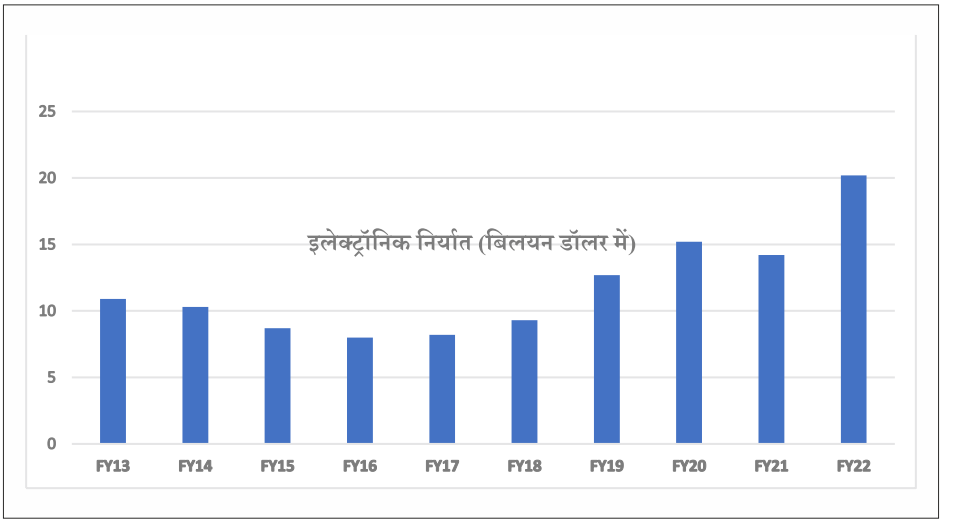

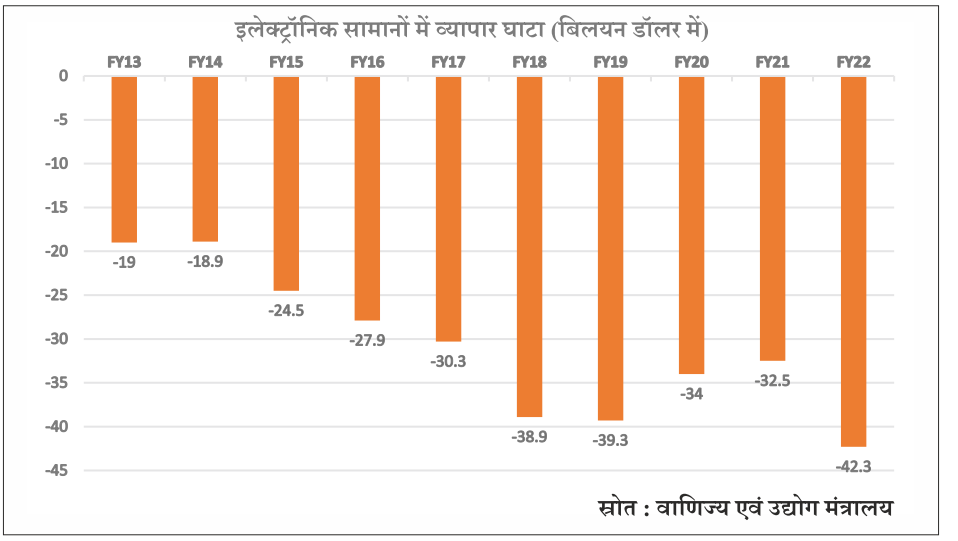

स्रोत : वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

मूल्य के आधार पर शीर्ष 10 मोबाइल फोन निर्यातक देशों का सीएजीआर

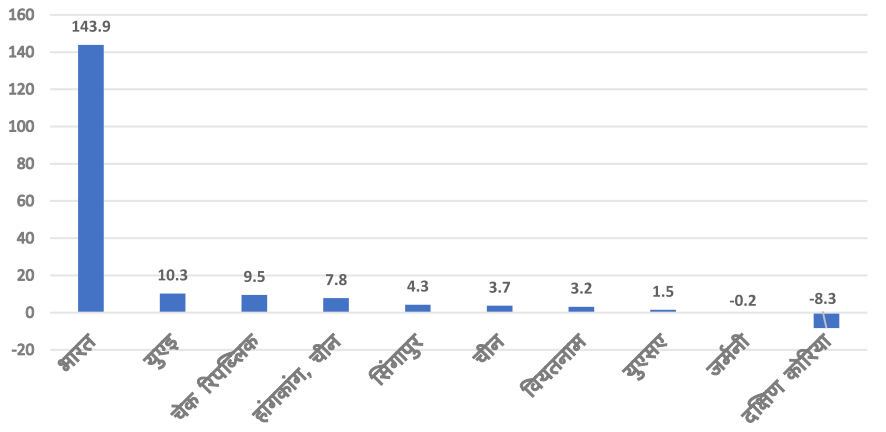

निर्यात में वृद्धि की तुलना में मोबाइल फोन के आयात में तेजी से गिरावट (बिलयन डॉलर में)

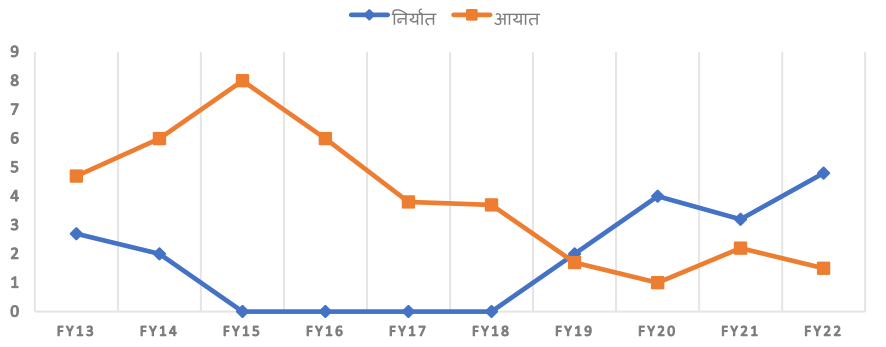

स्रोत : वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

मोबाइल फोन निर्यात में हिस्सेदारी (प्रतिशत में)

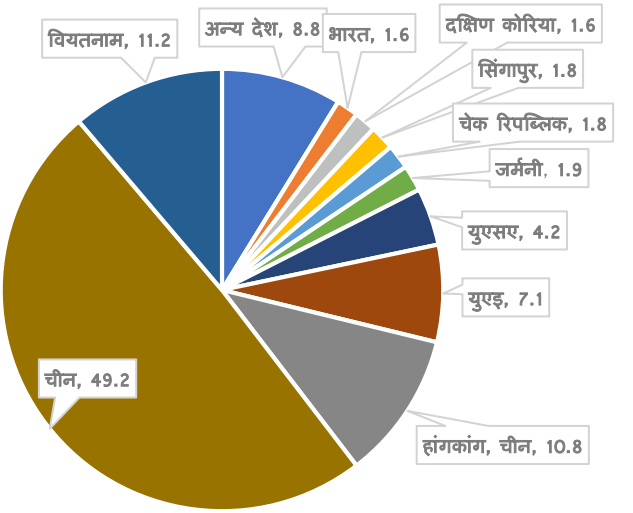

स्रोत : आई टी सी ट्रेड मैप

भारतीय रिजर्व बैंक वार्षिक रिपोर्ट: FY22 में अधिक बैंक धोखाधड़ी देखी गई लेकिन मूल्य आधे से कम हो गया 2021-22 में बैंकों और अन्य वित्तीय संस्थानों द्वारा धोखा धड़ी की घटनाओं की संख्या बढ़ने के बावजूद, 2021-22 में मूल्य के संदर्भ में रिपोर्ट की गई धोखाधड़ी में आधे से अधिक की कमी आई है।

2021-22 में, 60,414 करोड़ रुपये की धोखाधड़ी दर्ज की गई, जो 2020-21 में 1.38 ट्रिलियन रुपये से 56.28 प्रतिशत कम थी। धोखाधड़ी की संख्या के संदर्भ में, इन संस्थाओं ने 2020-21 में 7,359 धोखाधड़ी की तुलना में 2021-22 में 9,103 पर 23.69 प्रतिशत अधिक धोखाधड़ी की सूचना दी। भारतीय रिजर्व बैंक के आंकड़े केवल 1 लाख रुपये और उससे अधिक की धोखाधड़ी पर विचार करते हैं।

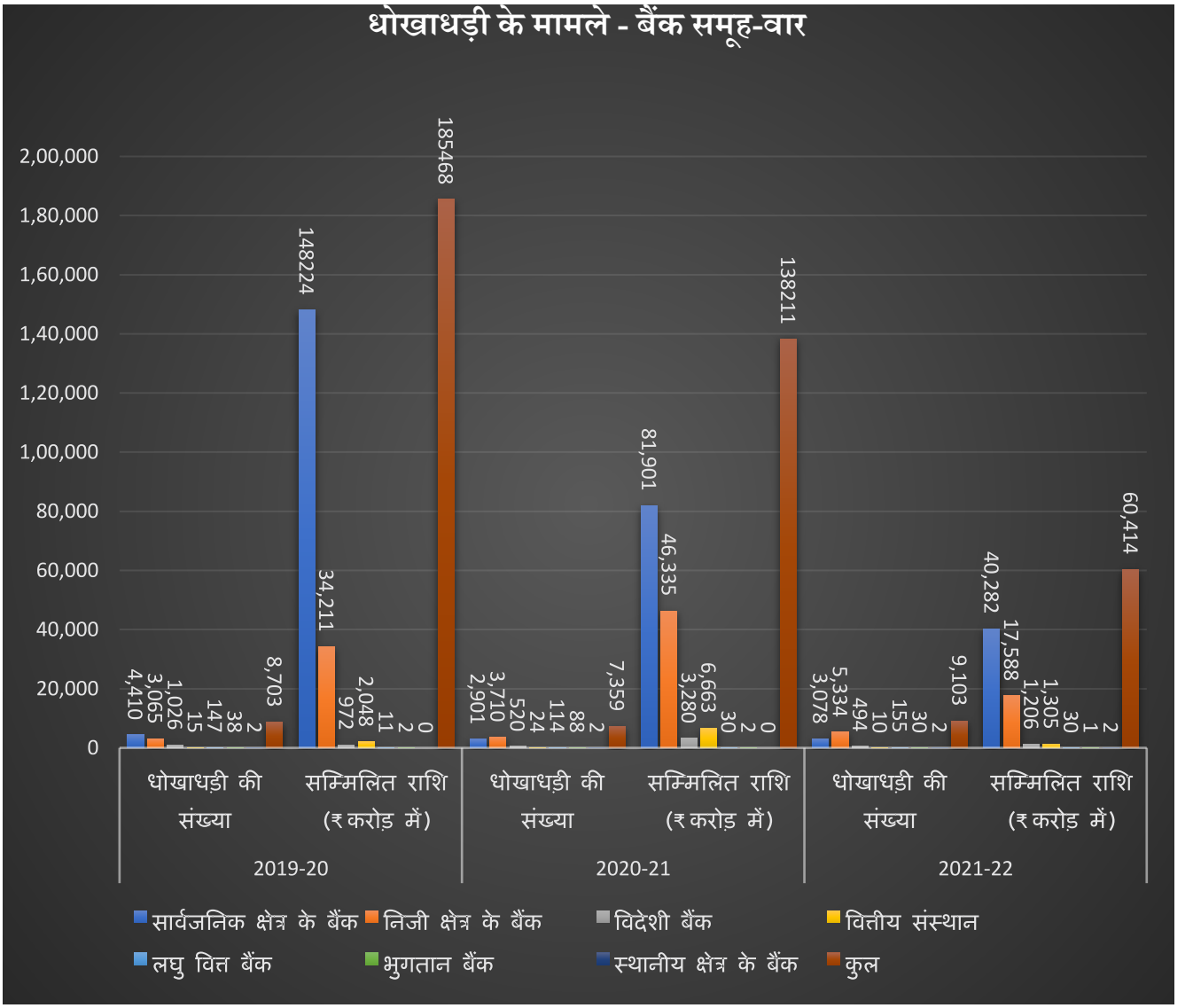

★★★★★

नए साल आते हैं

सुश्री नविता यादव

नए साल आते हैं चले जाते हैं
किए वायदे हम कहाँ निभा पाते हैं।

दो सालों तक जिन्दगी तो पलों में बिताई है
चन्द मुल्क़ों में करोना की ख़बर ने नींद फिर उड़ाई है।

संकल्प करो तो निभाओ
विकल्प अच्छा है तो अपनाओ।

नए साल में कुछ नया किया जाए
मस्जिद छोड़कर बच्चों को हँसाया जाए।

दो सालों तक तो उन्हें मायूसी की चादर ओढ़ाई है
फिर भी कहाँ लगता है कि चैन हमने पाई है।

सोचा था इस बला से हमने निज़ात पाई है
करोना की ख़बर ने फिर से नींद उड़ाई है।

अगर जिन्दगी दो पल का है मेहमान
फिर क्यूँ लोग बेच देते हैं ईमान।

कुछ शंहशाहों ने क्या अक्ल पायी है
बर्बादी और लड़ाई ही उन्हें भायी है।

कोई उन्हें बताए लड़ाई में कहाँ हैं भलाई
इसी लिए तो खफ़ा है पूरी खुदाई।

★★★★★

मैं धरती हूँ

श्री राहुल कुमार वर्मा

कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

मैं धरती हूँ, मैं धरती हूँ
मैं धरती हूँ, मैं धरती हूँ..
सृष्टि के हर एक प्राणी को
सीने से लगा के रखती हूँ

जो बंजर रेगिस्तान हुआ
वो भी है मेरा रुप बना
जो पर्वत हिम से ढ़का हुआ
वो भी है मेरा रुप बना
मैं धरती हूँ, मैं धरती हूँ.....

झरनो की कल कल है मुझसे
सागर की असीमता है मुझसे
नदियो का बहना है मुझसे
कोयल की कुहु कुहु मुझसे
मैं धरती हूँ, मैं धरती हूँ.....

हर प्राणी का जीवन मुझसे
दुनिया का रंग सुहाना मुझसे
कहीं उपजाऊ, कहीं बंजर हूँ
न्यारे न्यारे रुप मेरे
मैं धरती हूँ, मैं धरती हूँ.....

हर प्राणी की सांस मैं ही
जीवन का एक आधार मैं ही
हर कहानी मुझसे शुरू
जीवन का सार मैं ही हूँ
मैं धरती हूँ, मैं धरती हूँ.....

कहते है सब मुझको माता
मुझको तो बच्चो ने बांटा
कर दिये है टुकडे अनेक
फिर भी मैं तो हूँ एक
मैं धरती हूँ, मैं धरती हूँ.....

कही गांव, शहर और राष्ट्र के
नाम पे मुझको बांटा है
लड़ते मेरे अपने बच्चे
मुझको डर सताता है
मैं धरती हूँ, मैं धरती हूँ.....

युद्दों और विस्फोट से मैं तो
थर थर कम्पित होती हूँ
बेटो की ऐसी हरकत से
मैं खून के आंसू रोती हूँ
मैं धरती हूँ, मैं धरती हूँ.....

इतिहास मुझी से जन्मा है
सभ्यता की मैं जननी हूँ...
मैं धरती हूँ धरती हूँ.....

मैं वसुधा, मैं ही पृथ्वी
मैं ही धरती, मैं ही धरा
मैं अचला, मही, क्षिती, भूमि हूँ
मैं ही ज़मीन और धरित्री हूँ
मैं धरती हूँ, मैं धरती हूँ

गर तुमको मुझे बचाना है
मिल प्यार से सबको रहना होगा
छोड के सारी नफरतो को
मानव तुमको बनना होगा
मैं धरती हूँ, मैं धरती हूँ.....

★★★★★

केन्द्रीय स्वायत्त निकायों की वार्षिक लेखाओं पर भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक की पृथक लेखापरीक्षा प्रतिवेदन के सम्बन्ध में संक्षिप्त वर्णन

श्री अल्ताफ अली

केन्द्रीय स्वायत्त निकायों की पृथक लेखापरीक्षा प्रतिवेदन भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक के (कर्तव्यों, शक्तियों एवं सेवा शर्तों के अधीन) अधिनियम 1971 के अनुच्छेद १९(२) के अन्तर्गत सम्बन्धित राज्यों की लेखापरीक्षा दल द्वारा पृथक लेखापरीक्षा निर्धारित अवधि के अन्तर्गत सम्पादित किया जाता है। भारत सरकार के मंत्रालयों के अधीन कार्यरत विभागों को उनके बजट मॉग का पुनरीक्षण के उपरान्त बजट आबंटन तीन शीर्षक के अन्तर्गत किया जाता है। उन शीर्षकों के सम्बन्ध में विस्तार से नीचे बताया गया है।

अनुदान सं०- ओ० एच०-३१ सामान्य

चालू वर्ष में निकायों द्वारा सम्बन्धित मंत्रालयों से प्राप्त अनुदान को सामान्य मदों पर व्यय किया जाता है तथा अनुपयुक्त अनुदान को चालू दायित्व के अन्तर्गत उक्त शीर्षकों में तथा बैंक के बचत खाता में चल सम्पत्ति में दर्शाया जाता है। इस अनुदान के अन्तर्गत स्थापनामद एवं पूॅजीगत व्यय को सम्मिलित नहीं किया जाता है।

अनुदान सं०- ओ० एच०-३५ पूॅजीगत

चालू वर्ष में निकायों द्वारा सम्बन्धित मंत्रालयों से प्राप्त अनुदान को सामान्य मदों पर व्यय किया जाता है तथा अनुपयुक्त अनुदान को चालू दायित्व के अन्तर्गत उक्त शीर्षकों में तथा बैंक के बचत खाता में चल सम्पत्ति में दर्शाया जाता है। इस अनुदान के अन्तर्गत स्थापनामद एवं पूॅजीगत व्यय को सम्मिलित नहीं किया जाता है।

अनुदान सं०- ओ० एच०-३६, स्थापनामदः

चालू वर्ष में निकायों द्वारा सम्बन्धित मंत्रालयों से प्राप्त अनुदान को स्थापना मदों पर व्यय किया जाता है। तथा अनुपयुक्त अनुदान को चालू दायित्व के अन्तर्गत उक्त शीर्षक में तथा बैंक के बचत खाता में चल सम्पत्ति में दर्शाया जाता है। इस अनुदान के अन्तर्गत सामान्य एवं पूँजीगत व्यय को सम्मिलित नहीं किया जाता है। उपर्युक्त अनुदानों को एक दूसरे में व्यय नहीं किया जा सकता है। उपरोक्त शीर्षकों के अन्तर्गत प्राप्त अनुदानों एवं खर्चों को भारत सरकार के वित्त मंत्रालय एवं मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा अनुमोदित प्रपत्रों एवं दिशा निर्देशों के अनुसार निकायों द्वारा वार्षिक लेखा में दर्शाया जाता है। वार्षिक लेखा को तीन भागों में विभाजित किया गया है।

प्राप्ति एवं भुगतान लेखाः

इस लेखा में चालू वर्ष एवं विगत वर्षों की वास्तविक प्राप्तियॉ एवं भुगतानों की प्रविष्टियॉ की जाती है तथा मार्च के अन्त में बचत बैक खातों का अन्तिम अवशेष दर्शाया जाता है।

आय एवं व्यय लेखा

इस लेखा में केवल चालू वर्ष की आय एवं व्यय की प्रविष्टियॉ के साथ — साथ उपार्जित आय एवं प्रावधानित व्ययों की प्रविष्टियॉ की जाती है।

तुलन पत्र

इसके अन्तर्गत निकायों की समस्त दायित्वों और परिसम्पत्यिों को चालू वर्ष एवं विगत वर्षों को भी समायोजन के उपरान्त दर्शाया जाता है।

निकायों द्वारा निर्धारित प्रारूप पर वार्षिक लेखा तैयार कर तथा कार्यकारिणी / शासी निकाय व वित्त कमेटी की बैठक में अनुमोदन के उपरान्त निकायों द्वारा वार्शिक लेखा को आडिट विभाग को पृथक लेखा परीक्षा हेतु भेजा जाता है।

वार्षिक लेखा आडिट विभाग को प्राप्त हो जाने के उपरान्त लेखापरीक्षा दल का गठन कर निकार्यों में पृथक लेखा परीक्षा हेतु भेजा जाता है। भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक के कार्यालय के दिश निर्देशें के अनुसार केवल वार्षिक लेखा पर ही लेखापरीक्षा दल द्वारा टिप्पणी की जाती है। लेखापरीक्षा दल द्वारा पृथक लेखा परीक्षा तैयार कर मुख्यालय को भेजा जाता है। मुख्यालय पर सम्पादन अनुभाग द्वारा समस्त औपचारिकताएं पूर्ण करने के उपरान्त आडिट विभाग के महानिदेशक आडिट / प्रधान निदेशक आडिट के अनुमोदन के उपरान्त भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के कार्यालय को अनुमोदन हेतु भेजा जाता है। नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के कार्यालय के अनुमोदन एवं सुझाव के अनुसार पृथक लेखापरीक्षा प्रतिवेदन सम्बन्धित निकार्यों को भेजा जाता है जिसे सम्बन्धित निकायों द्वारा पृथक लेखा परीक्षा पर समस्त औपचारिकताएं पूरा करने के उपरान्त सम्बन्धित मंत्रालयों को भेज दिया जाता है। मंत्रालयों द्वारा पृथक लेखा परीक्षा को संसद के दोनों सदनों लोकसभा और राज्यसभा के पटलों पर रखा जाता है। दोनों सदनों से अनुमोदन के उपरान्त मंत्रालयों द्वारा सम्बन्धित निकायों को सूचित कर दिया जाता है। उपरोक्तानुसार प्रत्येक वर्ष यही प्रक्रिया अपनाई जाती है।

★★★★★

गणतंत्र दिवस 2023 की झलकियाँ

विलय (मर्जर) और अधिग्रहण (ऐक्वज़िशन) विषय पर आयोजित कार्यशाला की झलकियाँ

अंतर्राष्ट्रीय कर पर आयोजित कार्यशाला की झलकियाँ

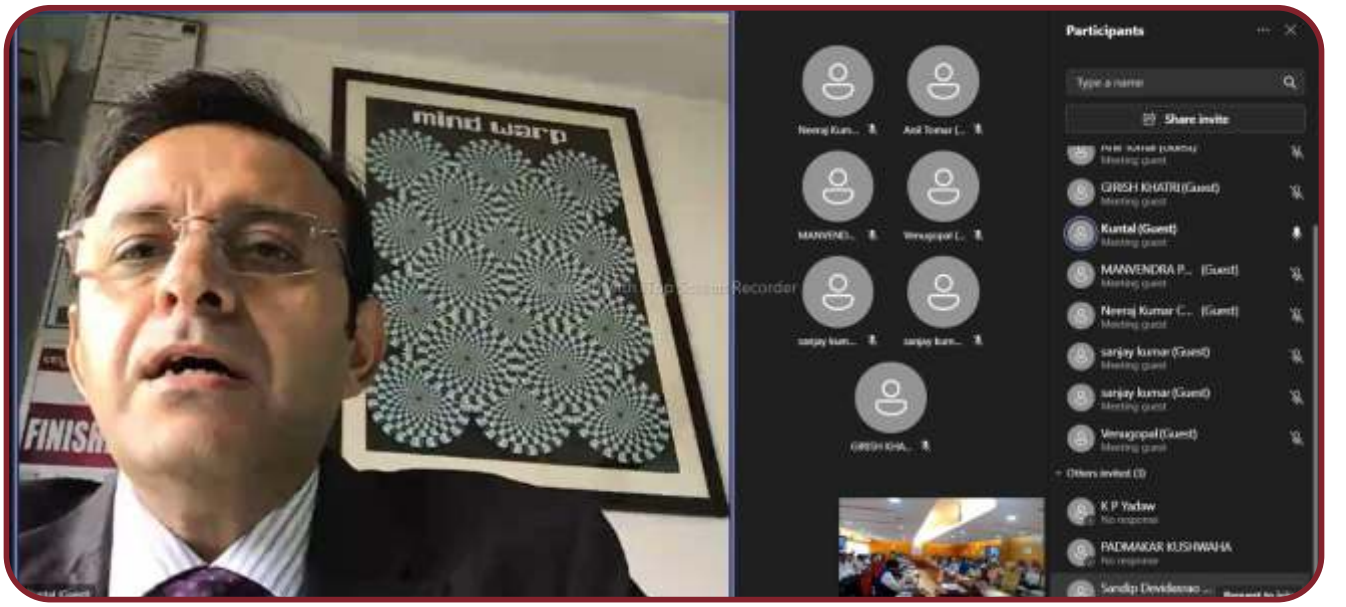

जिंदगी की किताब के एक पन्ने से

सुश्री संगीता सिंह

सर्दी की रात थी। तारे भी सर्दी से ठिठुर रहे थे। इसी बीच मेरी माँ मेरे कमरे में आई और बम पटक दिया । जैसे ही उसने मुँह खोला सर्दी विलुप्त हो गई। " बेटा लड़का अच्छा है कस्टम्स में अधिकारी है, ऐसा लड़का नसीब वालों को ही मिलता है। " बिना सोचे मैंने तुरंत जवाब दिया " मुझे शादी-वादी नहीं करनी है "। माँ ने कहा - "बेटा लड़का अपने शहर का है।" फिर क्या था , मेरे पूरे बदन में आग लग गई और बोली " मुझे छपरा में शादी करना ही नहीं है। " माँ खरी-खोटी सुनाते हुए कमरे से चली गई। मेरे मन में कई विचार आने लगे। क्या माँ-बाप पाल-पोसकर इसलिए बड़ा करते हैं कि एक दिन बेटी को दूसरे घर भेज दिया जाए। लड़कियों की शादी के अलावा इनको और कुछ नहीं सूझता है? अभी तो मैंने बी.ए. भी नहीं किया। फिर दोस्तों के साथ मटरगश्ती भाड़ में गई। क्या अच्छी नौकरी ही शादी का एक पैमाना होता है? मैंने तो उस लड़के को देखा भी नहीं। एक ज्वालमुखी मेरे भीतर तैयार हो रहा था , बस लावा को उद्गम का स्रोत नहीं मिल रहा था। सोचते-सोचते मैं सो गई।

सवेरे नाश्ते पर पिताजी ने वही रामायण छेड दिया। घर में पिता को ना कहना भगवान को ना कहने के बराबर था। साथ ही मैं पिताजी की बड़ी लाडली थी। बड़े प्यार से मुझे पाला था। फिर भी आधा पराठा खाने के बाद हिम्मत जुटाकर पिताजी से पूछा - " क्या मैं लड़के को देख सकती हूँ ? " सारे भाई आश्चर्य चकित होकर मेरी तरफ देखने लगे।पिताजी ने उस दिन गुस्सा नहीं किया और मुस्कुराकर बोला - " जिस दिन वरमाला डालना है उसी दिन देख लेना।"ऐसे कहते हुए वे थाने की तरफ बढ़ गए। अगर पिताजी पुलिस अफसर थे , तो मैं भी 007 से कम नहीं थी।

मेरे मन में अविलंब अपनी बिंदास सहेली राधिका की याद आ गई। मैंने उसे सारा माजरा सुना दिया और लड़का और उसके परिवार के बारे में पता लगाने के लिए भेज दिया। उस जमाने में सरकारी नौकरी मिलना मानो भगवान को पाने के बराबर था। फिर छपरा के इस गाँव से एक ही लड़के के कस्टम अधिकारी बनने के कारण वह गाँव पूरे इलाके में मशहूर हो गया था। अत: इन महाशय के बारे में पता लगाना राधिका के लिए कठिन कार्य नहीं था। राधिका एक कर्मठ एजेंट की तरह अन्वेषण में जुट गई।

पता चला कि महाशय गाँव के मास्टर साहब के बेटे हैं। राधिका उनकी छात्रा थी। राधिका हिम्मत जुटाकर मास्टर जी के घर पहुँच गई। मास्टर जी ने राधिका को बैठने के लिए कहा और पत्नी सविता को मिठाई लाने के लिए भेज दिया। मास्टर साहब ने पूछा- " बेटा ,परीक्षा की तैयारी कैसी चल रही है ? " राधिका ने कहा –" तैयारी तो अच्छी चल रही है मास्टर जी , परंतु गणित मेरे बस का नहीं है। मुझे लगता है कि मैं फेल हो जाउँगी।" इसी बीच एक सीधा-सादा लड़का जिसके चेहरे पे हल्की मूंछें आई हुई थीं , साईकिल से उतरकर सीधे घर में घुस गया। राधिका मन ही मन बोल रही थी – "अरे ! अजीब लड़का है , मेरी तरफ देखा भी नहीं। " लड़के का नाम राजीव था और राजेंद्र कॉलेज में एम.एस.सी में फर्स्ट डिविज़न लाया था। उस जमाने में फर्स्ट डिविज़न प्राप्त करना असंभव तो नहीं लेकिन कठिन था। साथ ही कस्टम्स में अधिकारी बनकर उसने गाँव में चार चाँद लगा दिया था। गाँव वाले उसकी तारीफ करते हुए नहीं थकते थे

मैं भी बहाना बनाकर पटना से छपरा पहुँच गई। शाम में घर पर मुझे देखकर राधिका की खुशी का ठिकाना नही रहा। मिलते ही राधिका ने गले लगा लिया और मजाक में बोली-"अगर तुम राजीव को रिजेक्ट करो तो मैं अपनी शादी की बात चलाऊँ।"मैंने बात को टालते हुए उससे पूछा -"लड़के के घर में स्कूटर भी नहीं हैं, क्या पूरे शहर में मुझे साईकिल पर घुमाएगा। एक तो छपरा ..... और दूसरी साईकिल.....क्या कॉम्बिनेशन है। मैं ठहरी अलहड़ एवं मस्त स्वभाव की लड़की, जबकि राधिका उम्र से ज्यादा समझदार थी। उसने गंभीर स्वर में मुझे समझाने की कोशिश की और प्यार से बोला संगीता सौदा बुरा नहीं है।

मैं कई दिनों तक चुपचाप रहने लगी। अंत में वो दिन आ गया जब मैं जयमाला लेकर उस इंसान के सामने खडी हो गई जिसके साथ मुझे बाकी की जिंदगी गुजारनी थी । चारों तरफ शोर हो रहा था। बारातियों में से एक महाशय ने आवाज़ दी "राजीव ! तुम माला मत डालना, पहले लड़की को डालने दो।" मैंने सोचा, यहाँ भी लड़की को ही समझौता करना पडेगा। मैंने भी ठान लिया कि मैं पहले वरमाला नहीं डालूँगी। लेकिन मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा, जब राजीव ने स्वयं आगे बढकर मेरे गले में माला डाल दी। शादी के बाद जब ससुराल गई तो वहाँ मुझे पिता के साथ-साथ शिक्षक एवं शिक्षिका मिल गए। इतना प्यार-दुलार मिला कि कई दिन तक मायके की याद नहीं आई।

आज शादी के 25 साल के बाद भी हमारे प्रेम संबंधों की मधुरता समय के साथ क्षीण नहीं हुई है। आज तक राजीव का प्रेम नि:स्वार्थ भाव से कायम है और सब से अच्छी बात है कि वह मेरी भावनाओं की कद्र करता है । आज लगता है कि माँ-बाप हमारे दुश्मन नहीं हैं, वे हमारी भलाई भली-भाँति समझते हैं। हमारी पढाई, नौकरी, विवाह और बच्चों को लेकर सबसे अधिक फ़िक्र माँ-बाप को ही रहती है। अत: उनका सम्मान करना हमारा कर्तव्य है। मानना या नहीं मानना अलग बात रही। मैं इस पीढी को खासकर यही हिदायत दूँगी कि माँ-बाप की सभी बातों में छिपे प्यार को समझने एवं कुछ बातों को स्वीकारने में ही हमारी भलाई है। जिंदगी के ऐसे कुछ खूबसूरत लम्हों को मैं अगले अध्याय में प्रस्तुत करूँगी।

★★★★★

चित्रकला : कुमारी अंजलि, भतीजी सुश्री बिना राय / कनिष्ठ अनुवादक

मेरा प्यारा घर

तख्तो-ताज की मंशा नहीं भगवान,
तू मुझे माँ की गोद दिलवा दे।
दूसरों से मिला यश-प्रशस्ति मैं क्या करूँ,
तू मुझे माँ से डांट खिलवा दे ।

बड़े से बिस्तर पर पसर कर अकेला सोता हूँ,
भाई के ऊपर पैर रखकर सोने का मजा दिलवा दे।
रेशम की चादर, मखमल का कंबल नहीं,
तू मुझे माँ का शॉल या आंचल दिलवा दे!!

क्या ही करूंगा इतने सारे धन दौलत का,
थोड़ा मुझे दे। बाकी से गरीबों का घर भर दे।
तू मुझे पैसे का धनी नहीं,
मान - इज्जत का धनी कर दे।

बहुत खरीद खाया मैंने पकवान यहाँ,
माँ के हाथ का 'करेला' ही दिलवा दे।
माँ कहती है बहुत पतला हो गया हूँ ,
तू मुझे उनकी हाथों की रोटी खिलवा दे।

झुलसाने वाली गर्मी में ए.सी. बहुत राहत देता है,
ए.सी. तू रख! तू मुझे बरगद का पेड़ दिलवा दे।
उच्चारण नहीं कर पाता हूं कॉफ़ी के नाम यहा,
तू मुझे घरवाली कड़क चाय पिलवा दे ।

शानो-शौकत से भरी है शहर की जिंदगी ,
तू मुझे गांव वाला सुकून दिलवा दें ।
हे भगवान तू मुझे महल नहीं,
मुझे मेरा प्यारा सा घर दिलवा दें।

डॉ. पप्पू प्रसाद शाह (प्रसाद)
सुश्री बिना राय के देवर

★★★★★

थोड़ा वक्त दो मुझे

थोड़ा वक्त दो मुझे, मैं डरा- सहमा हूँ , अभी पता चला मुझे,
मैं कितना विशाल हूँ।

सोचता था...
मैं एक बूंद, एक कतरा हूँ, मैं क्या ही कर पाऊंगा?
थोड़ी सी धूप पड़ते ही, भाप बन उड़ जाऊंगा।

सोचा ना था...
खुद को जोड़ूँ बार-बार, तो गंगा मैं बन जाऊंगा, हिमालय, पर्वत, झरने, नालो में भी, मैं नहीं समा पाऊंगा,
और सींच दू धरणी को बस एक बार, हर दिशा हरी-भरी कर जाऊंगा।

सोचता था...
मैं एक छोटा सा दीप हूं, मैं क्या ही अनंत अंधकार को मिटा पाऊंगा?
थोड़ी देर में ही अंधकार तले दब जाऊंगा।

सोचा ना था...
मिलूं खुद से बार-बार, तो सूरज मैं बन जाऊंगा,
तीनो लोकों का अंधियारा , मैं पल भर में हर जाऊंगा,
और पड़ेगी ऊमा धरा पर जब, नया जीवन सृजन कर जाऊंगा।

सोचता था...
अरबों की भीड़ में मैं अकेला, मैं क्या ही सुधार कर पाऊंगा,
भेड़ चाल की दुनिया में मैं, खुद को ही खो जाऊंगा।

सोचा ना था...
ना डगमगाऊं अपने पथ से, तो नया राह बना जाऊँगा,
भेड़ चाल की इस परंपरा को, अकेले ही धूल चटा जाऊँगा,
कभी डगमगा जाए किसी कर्मवीर का पैर, मैं उसकी शक्ति, उसका मनोबल बन जाऊंगा ।

मैं डरता था इन झोकों से,
मेरे अंदर सीमित तूफान हैं।
मैं नापता रहा कम अपने आप को,
मेरे अंदर पूरा ब्रह्मांड है।

थोड़ा वक्त दो मुझे...
थोड़ा वक्त दो मुझे,
मैं डरा, सहमा हूं ,
अभी पता चला मुझे,
मैं कितना विशाल हूँ।।

डॉ. पप्पू प्रसाद शाह (प्रसाद)
सुश्री बिना राय के देवर

★★★★★

चित्रकला : कुमारी अंजलि, भतीजी सुश्री बिना राय / कनिष्ठ अनुवादक

भगवान का बगीचा (मॉलिंनॉन्ग गांव)

श्री हेमंत
डी.ई.ओ.

आज मै आपको एशिया के सबसे स्वच्छ और सुंदर गाँव मॉलिंनॉन्ग के बारे में जानकारी देना चाहुंगा। भारत के उत्तर पूर्वी राज्य मेघालय की ईस्ट खासी हिल्स में स्थित मॉलिंनॉन्ग नामक छोटा सा गाँव है। आज जहाँ हमारे देश के बड़े छोटे शहरों और गांवों में प्रदूषण और गंदगी एक गंभीर समस्या बन गई है ऐसे में मॉलिंनॉन्ग गांव को एशिया का सबसे स्वच्छ और सुंदर गाँव होने का सम्मान मिलना ना सिर्फ गर्व की बात है अपितु ये प्रेरणादायी भी है। यहाँ के स्थानीय प्रशासन और गाँव वालों ने मिलकर इस गाँव को एशिया का सबसे साफ़ सुथरा गाँव होने का सम्मान दिलाया है।

इस गांव की खूबसूरती का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि इसे भगवान का बगीचा बोला जाता है। ये गांव कई सालों से स्वच्छता के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ के सभी लोग सुशिक्षित है। यहाँ साक्षरता दर 100 % है और गाँव के सभी लोग अंग्रेजी में बात कर सकते है। ये गाँव पर्यटन की दृष्टि से भी बहुत प्रसिद्ध है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कुछ साल पहले स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत की थी। इस मिशन के माध्यम से प्रधानमंत्री ने देश को स्वच्छ बनाने के लिए एक मुहिम छेड़ी थी। इस मिशन का बहुत व्यापक असर देश में देखने को मिला। परंतु उस समय भी देश में एक ऐसी जगह थी, जहां इस मुहिम की कोई जरूरत ही नहीं थी, यह गांव पहले से स्वच्छता के मामले में एक मिसाल पेश करता है।

इस खूबसूरत गांव में प्लास्टिक का इस्तेमाल नहीं किया जाता है। यहां बांस की बनी हुई डस्टबीन का प्रयोग किया जाता है। इस गांव में लोग सामान ले जाने के लिए कपड़ों से बने थैलों का प्रयोग करते हैं। यहां के बच्चे भी साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखते हैं। ये एक आदर्श गांव है। यहां के लोग पेड़ों के लिए खाद बनाने के लिए कचरे को एक गड्ढे में डालकर रखते हैं। ये गांव महिला सशक्तिकरण की मिसाल भी पेश करता है। यहां पर बच्चों को मां का सरनेम मिलता है और पैतृक संपत्ति मां द्वारा घर की सबसे छोटी बेटी को दी जाती है।

ये गांव झरना, ट्रेक, लिविंग रूट ब्रिज, डॉकी नदी के लिए मशहूर है। यहां की प्राकृतिक सुंदरता देखते ही बनती है। इस गांव में कई रंग- बिरंगें फूलों के गार्डन भी हैं जो यहां की खूबसूरती में चार चांद लगाते हैं। जंगल, नदियाँ, पहाड़ और मनोरम घाटियाँ और इसके अलावा पूरी दुनिया में वृक्षों की जड़ों और शाखों से बने प्राकृतिक पुल भी केवल यहीं पाए जाते है। इस गाँव में एक सुकून देने वाली शांति रहती है।

अक्सर ऐसा होता है जिस जगह पर्यटक आते है वहां गंदगी भी ज्यादा रहती है लेकिन मॉलिंनॉन्ग गांव में ऐसा नहीं है। यहाँ के लोग इस गाँव को पूरी तरह स्वच्छ रखते है और यहाँ आने वाले पर्यटकों को भी गंदगी ना फ़ैलाने की हिदायत देते है। गंदगी ना फैले इसके लिए इस गाँव के कोने कोने में लकड़ी से बने कचरापात्र होते है। लोग इनमे कचरा डालते है। इस कचरे का इस्तेमाल बाद में खाद के रूप में किया जाता है। जो कचरा खाद के रूप में काम ना लिया जा सके जैसे प्लास्टिक इत्यादि उसे नष्ट कर दिया जाता है।

★★★★★

श्रेष्ठता प्रमाण पत्र एवं नकद पुरस्कार वितरण समारोह की झलकियाँ

हिंदी भाषा से संबंधित कुछ रोचक जानकारियाँ

श्री कुमार सौरभ

- हिंदी को इसका नाम फारसी शब्द हिंद से मिला है, जिसका अर्थ है "सिंधु नदी की भूमि"।
- 14 सितंबर 1949 को भारत सरकार ने हिंदी भाषा को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया। इसे मनाने के लिए, हम 14 सितंबर को "हिंदी दिवस" मनाते हैं।
- भारतीय संविधान का भाग XVII राजभाषा के बारे में बात करता है। अनुच्छेद 343 के तहत, संघ की आधिकारिक भाषा को मंजूरी दी गई है, जिसमें देवनागरी लिपि में हिंदी और अंग्रेजी शामिल है।
- 1965 में हिंदी केंद्र सरकार की एकमात्र कामकाजी भाषा बन गई।
- यह फिजी में एक आधिकारिक भाषा है और सूरीनाम, गुयाना, मॉरीशस और त्रिनिदाद में हिंदी को एक क्षेत्रीय भाषा के रूप में स्वीकार किया जाता है।
- लल्लू लाल द्वारा 1805 में प्रकाशित प्रेम सागर हिंदी में पहली प्रकाशित पुस्तक है।
- हिंदी की पहली कविता प्रख्यात कवि अमीर खुसरो ने लिखी थी।
- बिहार उर्दू की जगह हिंदी को अपनी आधिकारिक भाषा के रूप में अपनाने वाला पहला राज्य था।
- श्रीलंका, संयुक्त अरब अमीरात, सिंगापुर, ऑस्ट्रेलिया, पाकिस्तान, न्यूजीलैंड और संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे अन्य देशों में हिंदी का व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है।
- मंदारिन चीनी, स्पेनिश और अंग्रेजी के बाद हिंदी को दुनिया की चौथी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा माना जाता है।
- हिंदी भाषा से संबंधित प्रावधानों को केंद्रीय हिंदी निदेशालय, भारत सरकार द्वारा नियंत्रित किया जाता है।
- लगभग 77% भारतीय हिंदी पढ़, लिख, बोल या समझ सकते हैं।
- पहला हिंदी टाइपराइटर 1930 के दशक के दौरान लॉन्च किया गया था।
- हिंदी प्राचीन भारतीय भाषा "संस्कृत" का प्रत्यक्ष वंशज है।
- 1913 में, दादा साहब फाल्के द्वारा पहली हिंदी फिल्म, राजा हरिश्चंद्र रिलीज़ की गई थी।
- हिंदी का कोई भी अक्षर उल्टे लिखे जाने पर भी भ्रम नहीं देता है या कोई दर्पण प्रतिबिम्ब नहीं दिखाता है।
- दुनिया भर में कुल 176 विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जाती है। जिनमें से अकेले 45 विश्वविद्यालय अमेरिका से हैं।
- सन् 2000 में हिंदी का पहला वेब पोर्टल अस्तित्व में आया।

★★★★★

हिंदी-तमिल मिलाप

सुश्री वाणी विशालाक्षी
वरिष्ठ अनुवादक

तमिलनाडु की संस्कृति एवं भाषा की प्राचीनता को पूरा विश्व जानता है। हिंदी तो भारत के हृदय का भाव है तथा उस भाव को व्यक्त करती आवाज़ भी है। लेकिन मैं मलयालम मातृभाषी, जन्मी तमिलनाडु में मैंने तहे दिल से तमिलनाडु की संस्कृति को आत्मसात किया। स्कूल और कॉलेज से तमिल भाषा मेरे साथ जुड़ गई। अब तमिलनाडु की संस्कृति और तमिल भाषा को मुझसे अलग करना असंभव है। मैं अब राजभाषा हिंदी कार्यान्वयन के कार्य पर लगी हुई हूँ। मैंने हिंदी तमिल माध्यम से सीखी। तमिलभाषी अध्यापकों/प्राध्यापकों से हिंदी का ज्ञानार्जन किया। अक्षर,शब्द, व्याकरण या साहित्य सब कुछ तमिल की सहायता से सीखा। तमिल या अंग्रेजी में सोचकर हिंदी में लिखना शुरु किया। बोलने के लिए कोई नहीं था। पुरानी हिंदी फिल्में एवं दूरदर्शन के हिंदी सीरियलों के पात्र भी मेरे लिए हिंदी के गुरु थे । हिंदी के प्रति तमिलभाषियों का नज़रिया एवं तमिलभाषियों के प्रति हिंदी भाषियों का नज़रिया – इस पर सालों से चर्चा होती रही है। तमिल माध्यम से हिंदी सीखने के कारण मेरे मन में उत्पन्न छोटी सी कल्पना है यह हिंदी-तमिल मिलाप।

तमिल: नमस्ते बहना ! कैसी हो ?

हिंदी : तमिल तू ... बढिया ! संपूर्ण भारत में फैली हूँ फिर खुशी की क्या कमी?

तमिल: संपूर्ण भारत में क्या बहना..... अंतरराष्ट्रीय स्तर में चौथे स्थान पर हो। भारतीय भाषा.... चौथे स्थान पर है। यह तो गर्व की बात है।

हिंदी : बात तो सही है। लेकिन विडंबना यह है कि इस बात को तेरे मुँह से सुन रही हूँ।

तमिल: (आश्चर्य से) विडंबना ..... इसमें क्या विडंबना है ?

हिंदी : अंतर्राष्ट्रीय पहुँच है..... लेकिन तमिलनाडु के तमिलभाषियों तक पहुँचने में असफल रही हूँ। (तमिल मुस्कुराती है)

हिंदी : क्यों मुस्कुरा रही हो ? अंग्रेज़ी को तो स्वीकार कर लिया हैं। मेरी गलती क्या है ? हिंदी विरोध क्यों कर रहे हैं तमिलभाषी ?

तमिल: ஹிந்தியை வெறுக்கவும் இல்லை புறக்கணிக்வும் இல்லை

हिंदी : अरे! रुक .. रुक.. ऐसा मैंने क्या कह दिया ... गाली क्यों दे रही हो ?

तमिल: गाली नहीं बहना .. .मैं यूँ बोल रही थी , हिंदी से न तो घृणा न ही अपेक्षा। जैसे आपको तमिल समझने में दिक्कत है वैसे ही तमिल भाषियों को हिंदी सीखने या समझने में दिक्कत है।

हिंदी : ऐसा ! मुझमें ऐसी क्या दिक्कत है ?

तमिल: कुछ व्यवहारिक समस्याएँ हैं बहना ! आप तो संस्कृत आधारित भाषा हो और मैं संस्कृत आधारित भाषा नहीं हूँ।

हिंदी : तुम्हें तो दुनिया की सबसे प्राचीनतम भाषा मान रहे हैं। संस्कृत आधारित भाषा न होने से क्या फर्क पडेगा?

तमिल: फर्क पडता है, बहना। सर्वप्रथम हम दोनों की वर्णमाला में अंतर है। आपकी वर्णमाला में घनानंद, कमलेश्वर , गजानन के उच्चारण में अंतर दिखाने के लिए क्रमश: घ,क,ग आदि अक्षर उपलब्ध हैं। चंडीगढ़ एवं छत्तीसगढ़ के लिए च एवं छ है। मेरे पास तो एक ही 'க' है -**கனானந்த்**, **கமலேஷ்வர்**, **கஜானன்**। एक ही 'ச' है **சண்டிகர்** एवं **சத்தீஸ்கர்** के लिए। तमिल भाषी हिंदी की वर्णमाला एवं उसके उच्चारण से ही भ्रमित हो जाते है।

हिंदी : बात तो सही है बहना। बुरा मत मानो ... हिंदी से क्लिष्ट है अंग्रेज़ी का उच्चारण – CAT में 'C' का उच्चारण 'क' एवं CHAIR में 'च'। फिर भी आपने अंग्रेज़ी को अपना लिया। तेरे 18 हैं .... मेरे 33 .... कुछ ही अक्षरों का फर्क है

तमिल: उच्चारण के मामले में हिंदी, अंग्रेजी की तुलना में आसान और अधिक व्यावहारिक है।

हिंदी : समझ ली .....फिर क्या ?

तमिल: भूगोल की दृष्टि से भी तमिलनाडु केवल तीन दक्षिण राज्यों से घिरा हुआ है। तमिलभाषी दक्षिणी भाषाओं को सीखने में जितने सक्षम हैं, हिंदी उतनी आसान नहीं है। दक्षिण राज्यों को पार करके ही हिंदी तक पहुँचना है।

हिंदी : इस नवीनतम युग में ई - माध्यम से अंतरिक्ष तक पहुँच रहे हैं। तू भी न..... दक्षिण राज्यों से घिरी हुई बात बोल रही हो।

तमिल: लेकिन हिंदी भाषी क्षेत्रों के निकट होने के कारण भाषा को सीखने के लिए प्रोत्साहन एवं मौके अधिक मिलते हैं। जैसे कि महाराष्ट्र, बंगाल, ओडिशा, गुजरात, पंजाब आदि राज्यों की सीमा के दूसरी ओर हिंदी बोली जाती हैं जिससे हिंदी सीखने एवं बोलने का अवसर अधिक है। लेकिन तमिलनाडु के पूर्व में समुद्र एवं अन्य तीन दिशाओ में दक्षिण राज्य होने के कारण हिंदी सीखने एवं बोलने हेतु अवसर कम मिलता है।

हिंदी : सही है .. केवल साधन से नहीं संवाद से ही भाषा को सीख सकते हैं। भाषा सीखने के लिए वातावरण की महत्वपूर्ण भूमिका है। और क्या समस्या है.....

तमिल: बहना सबसे भयानक समस्या तो लिंग है। निर्जीव वस्तुओं के लिंग की आदत डालना तो तमिलभाषी के लिए दु:स्वप्न ही है। हिंदी में तो पेड़, पौधे, पत्ता ,सूरज , चाँद ,कुरसी, कलम.... सब का लिंग है और उसके आगे भाव का भी लिंग है। बुढ़ापा, मिठास, खुशी, समस्या, चिंता स्त्रीलिंग है ....दुख ,सुख पुल्लिंग है , कप पुल्लिंग कप में भरी चाय स्त्रीलिंग है। पानी पुल्लिंग, बहता पानी अर्थात नदी स्त्रीलिंग, आँख स्त्रीलिंग ,उसका समानार्थी शब्द नेत्र पुल्लिंग है। उफ..

हिंदी : आराम से .....बीच में साँस ले बहना .....

तमिल: कारण बहुत सरल है – आवश्यकता उत्पन्न ही नहीं होती। तमिलभाषी का एक विशाल बहुमत जो तमिलनाडु में पैदा हुए और पले-बढ़े हैं, राज्य के भीतर ही अपनी शिक्षा पूरी करते हैं।इसका कारण यह है कि तमिलनाडु में बहुत सारे शैक्षणिक संस्थान हैं और शिक्षा के लिए किसी अन्य राज्य में जाने की आवश्यकता नहीं है ।तमिलनाडु अत्यधिक औद्योगीकृत राज्य होने के कारण, एक बार जब छात्र अपनी शिक्षा पूरी कर लेते हैं, तो उन्हें राज्य के भीतर ही नौकरी मिल जाती है। यदि आप एक ही शहर/राज्य में पढ़ते और काम करते हैं, तो आपको कोई नई भाषा सीखने की कोई आवश्यकता नहीं है। अत: तमिलभाषी को हिंदी सीखने की आवश्यकता भी कम है। राजनीतिक माहौल भी पहले सकारात्मक नहीं था, लेकिन यह बेहतर हो रहा है। अब हिंदी की प्रति लोगों का नजरिया बदल रहा है और हिंदी सीखने वालों की संख्या भी बढ़ रही है।

हिंदी : एक भाषा सीखने में दिक्कतें तो होती हैं। फिर भी प्रयत्न से बड़ा क्या हो सकता है। मैंने सुना सुबह 10 बजे से भारती हॉल में तिरुक्कुरल पर कुछ सेमिनार है चलो हम उधर जाएँगे।

तमिल: वहाँ दोपहर दो बजे से "कबीर वाणी" कार्यक्रम भी है।

हिंदी : तिरुवल्लुवर एवं कबीर तो हम दोनों का मान बढाते हैं। चलो फिर ..
(हिंदी एवं तमिल कंधे मिलाकर भारती हॉल की ओर बढ़ रही हैं।)

★★★★★

चित्रकला : कुमारी वृंदा मधु, भतीजी सुश्री वाणी विशालाक्षी / वरिष्ठ अनुवादक

सावन

श्री. रजनीश वर्मा
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

आज मौसम बहुत ही सुहावना था। आकाश में बादल छाए हुए थे। मंद मंद हवाएं चल रही थी। कलाई पर रंग बिरंगी राखी बांधे रखे छोटे छोटे बच्चे इठलाते हुए गलियों में धमाचौकड़ी मचा रहे थे। घरों से मीठे पकवान और मिठाई की खुशबू आ रही थी। दिव्या अपने मायके जाने की पूरी तैयारी कर लेने के बाद पति के आने का इंतजार बेसब्री से कर रही थी। किसी के आने की आहट सुनते ही वो उत्सुकता पूर्वक दौड़कर घर के दरवाजे पर आती और बाहर की ओर झाँकती, पति को न पाकर वह पुनः निराश होकर घर के अंदर चली जाती। स्वीटी भी नहा धोकर पूजा अर्चना करने के बाद भैया को राखी बांधने के लिए भूखी-प्यासी इंतजार कर रही थी। तभी अचानक दरवाजे पर किसी के आने की आहट सुनाई दी। हमेशा की भांति दिव्या इस बार भी उत्सुकता पूर्वक दौड़कर दरवाजे की ओर गई, इस बार दरवाजे पर बाबूजी दिखाई दिए जिनके हाथ पांव एवं शरीर पर जहां तहां गीली मिट्टी लगी थी। बहू को देखते हीं गिरिधर बाबू ने कहा-"अभी तक गई नहीं ? टिंकू अभी तक नहीं आया है क्या?" "नहीं", दिव्या ने कहा। गिरिधर बाबू की आवाज सुनकर अंदर से बाहर की ओर आते हुए उदास मन से स्वीटी बोली- पिता जी, देखो न, भैया अभी तक नहीं आए हैं। अभी तक लड़कपन जैसी ही हरकत करता है। अपनी जिम्मेदारी को समझता ही नहीं है। बड़बड़ाते हुए गिरिधर बाबू चारपाई पर जाकर बैठ गए। साड़ी का पल्लू संभालते हुए दिव्या बोली- बाबू जी खाना लाऊं क्या ? हां; लाइए खा लेता हूं। दिव्या मन हीं मन अपने पति पर क्रोधित भी हो रही थी। क्रोधित होना भी वाजिब था क्योंकि दोपहर होने जा रहा था और अभी तक टिंकू आया भी नहीं था, दिव्या के उमंग और उत्साह धीरे धीरे कम होते जा रहे थे।

प्रेम, उमंग और उल्लास का महीना सावन आते ही नवविवाहिताएँ रोमांचित हो उठती हैं। शादी के बाद पहला सावन को लेकर नवविवाहितों में खासा उत्साह देखने को मिलता है। वे बड़ी शिद्दत के साथ सावन के आने का इंतजार करती रहती हैं। हाथों की हरी हरी चूड़ियाँ और लाल मेंहदी ही उसकी खुशी बयां करने के लिए काफी होती है। देवालय और मंदिर खासकर शिव मंदिर भक्तों के लिए सज धज कर तैयार होती है। एक आस्था के साथ शिवलिंग को जलाभिषेक करने के लिए पीत और गेरूआ वस्त्र धारण कर काँवरियाँ शिव मंदिरों की ओर जाते हुए नजर आते हैं। बम बम भोले की गूँज से पूरा वातावरण भक्तिमय देखने को मिलता है। भले हीं आज सावन में गांव के बागों में झूले की परंपरा विलुप्त हो गई हो लेकिन मंदिरों में आज भी कृष्ण और राधा रानी की झूले की परंपरा कायम है। ग्रीष्म ऋतु की तपीश से मनभावन सावन की रिमझिम फुहारों से लोगों का मन हर्षित हो उठता है। प्यासी धरा व पशु पक्षी खिल उठते हैं।

कृषक खेतों में धान की रोपनी करने में जुट जाते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में धान की रोपण करती महिलाओं द्वारा मधुर आवाज में गाती कजरी से संपूर्ण वादियाँ संगीतमय हो जाती हैं । धान के पौधों से धरती हरी-भरी होकर दुल्हन जैसी मुस्कुराने लगती है। गिरिधर भी अपने खेतों में धान की रोपनी करने के लिए खेत की मेंड़ो को ठीक कर खाना खाने घर आए थे। "बाबू जी खाना लाई," दिव्या ने आवाज दी। "ठीक है रख दिजीए" हाथ पांव धोते हुए गिरिधर बाबू ने कहा। दिव्या चारपाई पर खाना रखकर पुनः घर के अंदर चली जाती है। हाथ पांव धोकर गिरिधर ज्योंहि खाने के लिए बैठते हैं कि टिंकू आ जाता है। "अभी तक कहां था ? देखो कितना बज गया। तुम्हें कुछ समझ में आता है कि नहीं। बहू और स्वीटी तुम्हारा कब से इंतजार कर रही हैं। अभी तक तुम्हारे बिना वो लोग खाना भी नहीं खाएं हैं। जाओ, जाकर पहले राखी बंधाओ और खा पीकर जल्दी से बहू को मायके ले जाओ," कहते हुए खरी खोटी सुनाना शुरू कर दिया। "पिताजी, रास्ते में मेरे कुछ पुराने दोस्त मिल गए थे उन्हीं लोगों से थोड़ा बात करने लगा था।" टिंकू बोलते हुए अंदर की ओर मुड़ गया। "ठीक है, ठीक है, जाओ पहले । गिरिधर बोले। दरअसल टिंकू शहर में नौकरी करता था और बहुत दिनों के बाद घर आया था । वह शादी के बाद पहली बार छुट्टी पर घर आया था । वह रक्षाबंधन के शुभ अवसर के कारण अपनी बहन स्वीटी के लिए कुछ गिफ्ट व मिठाई लाने के लिए बाजार गया था । रास्ते में कुछ दोस्तों से बात करने पर आने में थोड़ा विलम्ब हो गया था। "स्वीटी किधर हो," पूछते हुए टिंकू घर के अंदर प्रवेश किया । "भैया कितनी देर कर दी आपने!" भैया पर नजर पड़ते हीं स्वीटी बोली। "माफ करना बहन थोड़ी देर हो गई। अब देर न करो और जल्दी से राखी बांधों। और हां, तुम भी जल्दी से जाने को तैयार हो जाओ, टिंकू ने क्रमशः अपनी बहन स्वीटी और पत्नी दिव्या से बोला । पहले से दीपक, चंदन और राखी से सजा रखी थाली लाने के लिए स्वीटी जल्दी से कमरे की ओर भागी और राखी लाकर टिंकू के कलाई पर बांधने लगी और उधर मायके जाने की उमंग और देर से आने की नाराज़गी के मिश्रित मनोभाव के साथ दिव्या जाने की तैयारी करने लगी। भाई बहन के बीच राखी की रस्म पूरी होने के बाद टिंकू ने गाड़ी में सामान रखा और गाड़ी में बज रहे "सावन आया.., बादल छाए....।" गाने को गुनगुनाते हुए दोनों खुशी खुशी प्रस्थान कर गए।

★★★★★

दोस्त

श्रीमती नंदिता आ. शिवशरण
सहायक पर्यवेक्षक

जिंदगी मतलब क्या? “ एक धुंधली सी शाम- चार दोस्त, चार कप चाय
“जिंदगी मतलब क्या? “ एक इनोवा कार , सात दोस्त, एक लंबा खुला पहाड़ी रास्ता”
जिंदगी मतलब क्या? “ एक दोस्त का घर, हल्की सी बारिश, ढेर सारी बातें”

जिंदगी मतलब क्या? “स्कूल/कॉलेज से बंक , एक कचोरी,
एक समोसा और बिल कौन देगा इस की बहस”

जिंदगी मतलब क्या? “ फ़ोन उठाते ही पड़नेवाली दोस्त की एक गाली,
और सॉरी बोलने पर पड़नेवाली और एक गाली”
जिंदगी मतलब क्या? “कई सालों बाद, अचानक पुराने दोस्त का
SMS और पुरानी यादो से आँखों में आये आँसू”

हम बहुत दोस्त बनाते हैं, कुछ ख़ास बन जाते हैं
कुछ हमें ख़ास बनाते हैं, कुछ विदेश चले जाते हैं
कुछ शहर बदल जाते हैं, कुछ संपर्क में हैं,
कुछ संपर्क में नहीं हैं

हम अपने अहंकार के कारण कुछ से संपर्क नहीं करते हैं

ऐसे ही सभी दोस्तों की हमें याद आती हैं

उनके बारे में उनके द्वारा निभाई गई भूमिका के कारण
हमारे जीवन में पुराने दोस्तों को बताना जरुरी लगता है कि
हम उन्हें कभी नहीं भूलेंगे

सभी दोस्तों को और उनकी नायाब दोस्ती को सलाम करीए-

★★★★★

कार्यालय में आयोजित चिकित्सा शिविर की झलकियाँ

यौन शोषण अधिनियम विषय पर आयोजित कार्यशाला की झलकियाँ

सतर्कता जागरूकता विषय पर आयोजित कार्यशाला की झलकियाँ

एक सफल कोशिश

श्रीमती नंदिता आ. शिवशरण
सहायक पर्यवेक्षक

सभी के जीवन में एक ऐसा समय आता है जब सभी चीज़े आपके विरोध में हो जाती है और हर तरफ से निराशा होने लगती है, आप जीवन के उस मोड़ पर खड़े होते हो जहां कुछ भी सही नहीं होता है। बहुत सारे काम करने के लिए है पर किसी वजह से कोई भी काम बहुत मेहनत और प्रयासों के बावजूद भी सफल नहीं होता है। ऐसी स्थिति में लोग अपने भाग्य और परिस्तिथियों को कोसते है - दोष देते है, अगर किसी काम में असफल हो भी गए तो क्या हुआ ? यह जीवन अंतिम प्रयास तो नहीं... यही अंत नहीं होता है। फिर से दिलोजान से कोशिश करने से सफलता होनी ही है...बहुत पुरानी कहावत है "लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती-- कोशिश करनेवालों की कभी हार नहीं होती"। असफलता ही तो एक प्रकार से सफलता की शुरुआत है, इससे घबराना नहीं चाहिए बल्कि पूरे जोश के साथ फिर से प्रयास करना चाहिए।

हिरन के दौड़ने की क्षमता करीब 90 किलोमीटर प्रति घंटा है, वही बाघ के दौड़ने की रफ़्तार करीब 60 किलोमीटर प्रति घंटा है... फिर भी बाघ हर बार हिरन का शिकार कर ही लेता है... जानते है क्यों?...क्योंकि हिरन के मन में डर होता है की वह बाघ से नहीं जीत पायेगा और इसी डर की वजह से वह बार-बार पीछे मुड़कर देखता है, हिरन के मन का डर उसकी रफ़्तार को कम कर देता है और बाघ उसका शिकार कर लेता है।

मन का डर हमें हमेशा आगे बढ़ने से रोकता है और कमजोर होने का एहसास कराता है। आपको अपने मन को जीतना बहुत जरुरी है क्योंकि जो व्यक्ति मन से हार जाता है वो अपार क्षमता होने के बावजूद सफल नहीं हो पता है...

इसलिए हमेशा ये याद रखें, "एक सकारात्मक विचार आपकी जिंदगी बदल सकता है"।

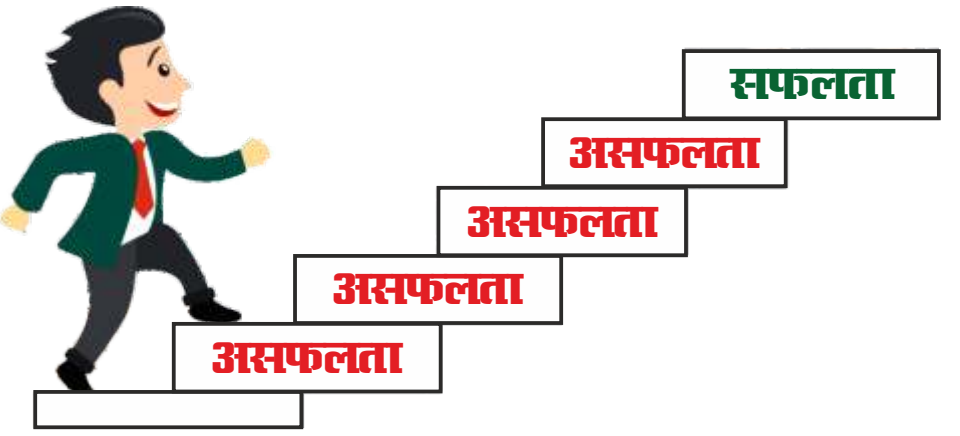

★★★★★

भारत के संविधान के अंतर्गत स्वतंत्रता का अधिकार

राकेश कुमार सिंह
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम लड़ने का एक मूल लक्ष्य यह भी था कि भारत के नागरिकों को स्वतंत्रता के अधिकार मिले, जो अधिकार उन्हें ब्रिटिश साम्राज्य के होते हुए नहीं मिल पा रहे थे। स्वतंत्रता, व्यक्ति का नैसर्गिक अधिकार है और इस प्रकार के नैसर्गिक अधिकार को किसी भी शासन द्वारा छीना नहीं जा सकता है। व्यक्तिगत स्वतंत्रता के अधिकार को मूल अधिकारों में सर्वोच्च अधिकार माना जाता है क्योंकि स्वतंत्रता ही जीवन है और बगैर स्वतंत्रता के जीवन की कल्पना करना कठिन है। बगैर स्वतंत्रता का जीवन पशु के समान जीवन है। भारत के संविधान का अनुच्छेद 19 स्वतंत्रता के संदर्भ में खुलकर उद्घोषणा करता है।

भारत के सभी नागरिकों को अनुच्छेद 19 के अंतर्गत स्वतंत्रता के वे सभी अधिकार दे दिए गए हैं जिन अधिकारों के लिए भारत की जनता द्वारा एक लंबे समय तक संघर्ष किया गया है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 19 से 22 तक में भारत के नागरिकों को स्वतंत्रता संबंधी विभिन्न अधिकार प्रदान किए गए हैं। यह चारों अनुच्छेद दैहिक स्वतंत्रता के अधिकारपत्र स्वरूप हैं। यह स्वतंत्रता मूल अधिकारों का आधार स्तंभ भी है।

इनमें 6 मूलभूत स्वतंत्रताओं का प्रमुख स्थान है, वह मूलभूत स्वतंत्रता निम्न है :-

1) वाक्य और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता।
2) शांतिपूर्वक सम्मेलन करने की स्वतंत्रता।
3) संगम या संघ बनाने की स्वतंत्रता।
4) भारत के राज्य में सर्वत्र अबाध संचरण की स्वतंत्रता।
5) भारत के राज्य क्षेत्र के किसी भाग में निवास करने और बस जाने की स्वतंत्रता।
6) कोई भी वृत्ति, उपजीविका, व्यापार या कारोबार करने की स्वतंत्रता।

अनुच्छेद 19 के अंतर्गत दी गई ऊपर वर्णित 6 स्वतंत्रता केवल नागरिकों को प्राप्त है। अनुच्छेद 19 में नागरिक शब्द का प्रयोग करके यह स्पष्ट कर दिया गया है कि यह स्वतंत्रता केवल भारत के नागरिकों को ही उपलब्ध है। भारत का नागरिक होना अपने आप में एक गरिमामई बात है तथा भारत का नागरिक होने की कुछ उपयोगिता भी होनी चाहिए। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए अनुच्छेद 19 के सभी अधिकार केवल भारत के नागरिकों को उपलब्ध कराए गए हैं। इस नागरिक शब्द में केवल मनुष्यों का बोध है इसमें किसी प्रकार का कोई कृत्रिम व्यक्ति, कंपनी या फर्म सम्मिलित नहीं है क्योंकि मूल अधिकार केवल मनुष्य को प्राप्त है। भारत के संविधान के अनुच्छेद 19 के अंतर्गत दिए गए स्वतंत्रता के अधिकार आत्यंतिक या असीम नहीं है। किसी भी देश में नागरिकों के अधिकार असीमित नहीं हो सकते हैं।

एक व्यवस्थित समाज में ही अधिकारों का अस्तित्व हो सकता है। नागरिकों को ऐसे अधिकार नहीं प्रदान किए जा सकते जो समस्त समुदाय के लिए अहितकर हो, यदि व्यक्तियों के अधिकारों पर समाज अंकुश न लगाएं तो उसका परिणाम विनाशकारी होगा। स्वतंत्रता का अस्तित्व भी तभी संभव है जब विधि द्वारा अपने अधिकारों के प्रयोग में हम दूसरे के अधिकारों पर आघात नहीं पहुंचाते हैं।

भारत के संविधान के अनुच्छेद 19 के अंतर्गत जो स्वतंत्रता के अधिकार दिए गए हैं उन पर निर्बंधन (Restriction) खंड 2 से 6 के अधीन दिए गए आधारों पर ही लगाए जा सकते हैं। इस प्रकार के निर्बंधन युक्तियुक्तता (Reasonableness) की कसौटी पर होना चाहिए। कोई निर्बंधन युक्तियुक्त है या नहीं इसकी युक्तियुक्तता का निर्धारण करना न्यायालयों का कार्य है। जब स्वतंत्रता के इन अधिकारों का प्रयोग करते हुए किसी दूसरे के अधिकारों पर आघात पहुंचाया जाता है तो ऐसी स्थिति में न्यायालय इन अधिकारों पर निर्बंधन की व्यवस्था करती है तथा युक्तियुक्त की कसौटी की जांच करके न्यायालय उन अधिकारों पर निर्बंधन तय कर देती है। नागरिकों के अधिकारों पर लगाए गए निर्बंधन अन्यायपूर्ण नहीं होना चाहिए। व्यक्तिगत हित और सामाजिक हित में सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास होना चाहिए। राज्य की नीति निर्देशक तत्व में निहित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए लगाए गए निर्बंधन उपयुक्त माने जा सकते हैं।

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता अनुच्छेद-19 (1) (क) - भारत के संविधान के अनुच्छेद 19 (1) (क) के अंतर्गत बोलने की स्वतंत्रता का प्रावधान किया गया है। वाक्य और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्रजातांत्रिक शासन व्यवस्था की महत्वपूर्ण आधारशिला है। प्रत्येक प्रजातांत्रिक सरकार इस स्वतंत्रता को बड़ा महत्व देती है, इसके बिना जनता की तार्किक एवं आलोचनात्मक शक्ति को, जो प्रजातांत्रिक सरकार के समुचित संचालन के लिए आवश्यक है, विकसित करना संभव नहीं है। वाक्य और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अर्थ शब्दों, लेखों, मुद्रन, चिन्हों या किसी अन्य प्रकार से अपने विचारों को व्यक्त करना है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता में किसी व्यक्ति के विचारों को किसी ऐसे माध्यम से अभिव्यक्त करना सम्मिलित है जिससे वह दूसरे तक उन्हें संप्रेषित कर सके। इस प्रकार इनमें संकेत चिन्ह तथा ऐसी ही अन्य क्रियाओं द्वारा किसी व्यक्ति के विचारों की अभिव्यक्ति सम्मिलित है। अनुच्छेद 19 में प्रयुक्त अभिव्यक्ति शब्द इसके क्षेत्र को बहुत विस्तृत कर देता है। विचारों को व्यक्त करने के जितने भी माध्यम है अभिव्यक्ति पदावली के अंतर्गत आ जाते हैं। इस प्रकार अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता में प्रेस की स्वतंत्रता भी सम्मिलित हो जाती है। विचारों का स्वतंत्र प्रसारण स्वतंत्रता का मुख्य उद्देश्य है। यह भाषण द्वारा यह समाचार पत्र द्वारा किया जा सकता है। समय के साथ अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का क्षेत्र विस्तृत होता चला गया। भारत के संविधान के अंतर्गत दिए गए इस अनुच्छेद से ही जानने के अधिकार (Right to Information) का भी जन्म हुआ है। सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 भारत के संविधान के इस अनुच्छेद के अंतर्गत ही बनाया गया है। इस अधिनियम का उद्देश्य देश के नागरिकों को लोक अधिकारियों के पास सरकारी कामकाज से संबंधित सूचनाओं को प्राप्त करने का अधिकार प्रदान करना है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर निर्बंधन निम्न आधार पर लगाए जा सकते हैं, जिनका उल्लेख भारत के संविधान के अनुच्छेद 19 (2) के अंतर्गत किया गया है :-

I. राज्य की सुरक्षा।

II. विदेशी राज्यों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंधों के हित में।

III. लोक व्यवस्था।

IV. शिष्टाचार और सदाचार के हित में।

V. न्यायालय अवमानना।

VI. मानहानि।

VII. अपराध उद्दीपन के मामले।

VIII. भारत की संप्रभुता और अखंडता।

निवास की स्वतंत्रता का अधिकार - भारत के संविधान के अनुच्छेद 19 (1) (ड) के अंतर्गत भारत के सभी नागरिकों को संपूर्ण भारत में कहीं भी बस जाने और निवास करने की स्वतंत्रता प्रदान की गई है। इस प्रकार भारत में कहीं भी बस जाने के संदर्भ में पूर्व अनुमति की कोई आवश्यकता नहीं है पर इस अनुच्छेद के अंतर्गत खंड 5 में कुछ निर्बंधन लगाए गए हैं जिनका उद्देश्य राज्य साधारण जनता के हित में या अनुसूचित जनजातियों के संरक्षण के लिए युक्तियुक्त निर्बंधन है।

निवास की स्वतंत्रता और भ्रमण की स्वतंत्रता एक दूसरे के पूरक हैं और दोनों का लक्ष्य राष्ट्रीय एकता की स्थापना करना है। भ्रमण की स्वतंत्रता की भांति निवास की स्वतंत्रता पर साधारण जनता के हित में या किसी अनुसूचित जनजाति के हित में संरक्षण के लिए युक्तियुक्त निर्बंधन लगाए जा सकते हैं। किसी समय भारत अलग-अलग प्रांतों में बंटा हुआ था तथा संपूर्ण भारत की अखंडता नहीं थी। एक स्थान के व्यक्ति को दूसरे स्थान पर निवास करना कठिन कार्य होता था। भारत को राज्यों का संघ बनाया गया परंतु राज्य को यह शक्ति नहीं दी गई है कि वह अपने राज्य की सीमा में भारत के किसी दूसरे राज्य के व्यक्ति को निवास नहीं करने दे। कोई भी भारत का नागरिक भारत के किसी भी हिस्से में अबाध रूप से बस सकता है और निवास कर सकता है, वहां संचरण कर सकता है। इससे भारत की अखंडता की भावना अधिक मजबूत होती है जिसका उल्लेख भारत की प्रस्तावना के अंतर्गत किया गया।

व्यापार और कारोबार करने की स्वतंत्रता अनुच्छेद-19 (1)6 (छ) - भारत के संविधान का अनुच्छेद 19(1) (6)(छ) का भारत के किसी भी व्यक्ति को कोई भी व्यक्ति व्यापार उपजीविका या कारोबार करने की पूरी स्वतंत्रता प्रदान करता है। इस अधिकार पर राज युक्तियुक्त निर्बंधन लगा सकती है। खंड 6 के अधीन निम्नलिखित आधारों पर राज्य किसी भी व्यापार करने की स्वतंत्रता पर निर्बंधन लगा सकता है। व्यापार करने के अधिकार में व्यापार को बंद कर देने का अधिकार भी शामिल है। राज्य किसी व्यक्ति को व्यापार करने के लिए बाध्य भी नहीं कर सकता है किंतु अन्य अधिकारों की तरह व्यापार को बंद करने का अधिकार भी एक आत्यंतिक अधिकार नहीं है और सर्वजनिक हित के लिए इसे निर्बंधित व नियमित और नियंत्रित किया जा सकता है।

संघ बनाने की स्वतंत्रता अनुच्छेद-19 (1) (ग) - भारत के संविधान का अनुच्छेद 19 (1) भारत के समस्त नागरिकों को संस्थाएं संघ बनाने की स्वतंत्रता प्रदान करता है संघ या संस्था बनाने के अधिकार में संगठन या प्रबंध का अधिकार भी निहित है, यह स्थाई संस्था होती है इस प्रकार की संस्था और उनके सदस्यों का उद्देश भी सामान्य होता है। इस प्रकार इसमें कंपनी, सोसाइटी, साझेदारी, श्रमिक संघ और राजनीतिक दल आदि बनाने का अधिकार भी सम्मिलित है। इसमें केवल संघ या संस्था बनाने का ही नहीं बल्कि उसे चालू रखने का भी अधिकार है। इस अधिकार पर सरकार निर्बंधन लगा सकती है, अन्य अधिकारों की भांति इस अनुच्छेद के खंड 4 के अधीन भी राज्य को इस स्वतंत्रता पर लोक व्यवस्था के सदाचार या देश की प्रभुता के हित में युक्तियुक्त प्रतिबंध लगाने की शक्ति प्राप्त है।

यह देखा जा सकता है की भारतीय संविधान ने अपने नागरिकों को समुचित सवतंत्रता के अधिकार दिए हैं परन्तु अराजकता और देशविरोधी ताकतों को नियंत्रण में रखने के लिए उनकी कुछ सीमाएं तय की हैं। इन सीमाओं के बावजूद भारतीय नागरिक उस स्वतंत्रता का आनंद भरपूर उठा सकता है, जिसकी एक मनुष्य कामना करता है।

★★★★★

चित्रकला : कुमारी वृंदा मधु, भतीजी सुश्री वाणी विशालाक्षी / वरिष्ठ अनुवादक

एक था राजू (भावपूर्ण श्रद्धांजलि)

अंकुश आत्माराम बने
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

एक था राजू.... ।
शायद उसकी रही होगी यही आरजू ।
जिंदगी में अगर कुछ न कर पाऊँ।
तो कम कम से दुनिया को तो हँसाऊँ ।।

स्टेंडप कॉमेडी का बादशाह था।
उसके साथ एक और किरदार ।
लुप्त हो गया था, ।
वह गजोधर भैय्या था।

सच में अभी भी यकीन नहीं हो रहा था।
जो इस धरती पर अपनी। एक छाप छोड गया था।
जो जाने के बाद भी हर दिल में घर कर गया था।

किसी को आसान है रुलाना ।
किंतु मुश्किल होता है हँसाना।
ऐसा ही ओ एक मशहूर हास्य कलाकार था । ।

हँसते हँसते आँखो से .... ।
आँसू निकल आते थे।
इतना जबरदस्त कलाकार था।।
हँसाते हँसाते मज़ाक मज़ाक में।
अचानक इतनी जल्दी दुनिया से विदा होगा गया।

ऐसे हरहउन्नर हास्य कलाकार ।
स्टेंडप कॉमेडी किंग राजू श्रीवास्तवजी को ।
दिल पे रखकर अंकुश ..... ।
भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।।

★★★★★

मन की व्यथा

श्री. रजनीश वर्मा
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

इस कश्मकश जिंदगी का,
हाल क्या मैं बयां करूं।
ऐ जिन्दगी अब तू हीं बता,
मैं क्या करूं; क्या ना करूं।।

करवटें बदलते,
बीत जाती है रातें।
खुश रहे बाग के रखवाले,
इसलिए तन्हाइयों में जी रहा हूं।।

झूठी मुस्कान से,
ग़म छुपाए जा रहा हूं।
लोगों के समझ से परे,
मैं जिंदगी काटे जा रहा हूँ ।।

इस कसक भरी जिंदगी में,
एक तरफ है जनकदुलारी;
एक तरफ है कौशल्या माई ।
किसे छोड़ूँ; किसे अपनाऊं, इसी ऊहापोह में;
किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाता हूँ।।

हृदय स्पर्श कर जाती,
पिता पुत्र की भावना।
मन को विचलित कर जाती,
कन्हैया की किलकारियाँ।।

कर्तव्य से विमुख होना,
दूरी है; हमारी मजबूरियां।
मैं स्तब्ध रह जाता,
देखकर परेशानियां।।

हृदय हमारा शर्मशार हो जाता,
जब अधर्म मैं कर्मकांड करूं।
आंखें हमारी नम हो जाती,
अपनों को जब याद करूं।।

मैं नहीं चाहता;
मर्यादा पुरुषोत्तम राम बनूं।
लेकिन ऐ जिन्दगी अब तु हीं बता,
मैं क्या करूं; क्या ना करूं।।

★★★★★

सफ़र

श्री. रजनीश वर्मा
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

"राम-राम भाई" चक्रधर की ओर जाते हुए जग्गू ने दूर से ही कहा और हाथ जोड़कर नमस्कार किया।

जग्गू को अपने गांव से आए कई दिन हो गए थे लेकिन शहर में शीतलहर का प्रकोप होने के कारण जब से वह गांव से शहर आया था तब से वह अभी तक घर से बाहर नहीं निकला था। बहुत ठंड और कोहरा होने के कारण लोग अपने-अपने घरों में ही दुबके हुए थे। कहीं कहीं इक्का-दुक्का लोग ही चौक चौराहों पर अलाव जलाकर हाथ सेकते नजर आते थे। कई दिनों से धूप भी नहीं निकला था, पार्क में टहलने वालों का आवागमन कम हो गया था। आज बहुत दिनों के बाद मौसम साफ होने के कारण लोग गुनगुनी धूप में सुबह सुबह घूमने निकले थे। जग्गु भी वर्षों बाद उसी पुराने पार्क में घूमने आया था जहां नौकरी के समय जवानी में सुबह सुबह टहलने आया करता था तभी अचानक उसकी नज़र अपने पुराने मित्र चक्रधर पर पड़ी।

अपने नजदीक आते हुए जग्गू को "राम राम भाई", कहते हुए चक्रधर ने भी हाथ जोड़कर अभिवादन किया।

उम्र के इस पड़ाव में चेहरे पर झुर्रियां आ जाने और वर्षों बाद मिलने के कारण चक्रधर पहली नजर में जग्गू को पहचान नहीं पाया। फिर सोचते सोचते अपने पुराने मित्र जग्गू की याद आयी। याद आते ही वर्षों से खोया हुआ प्यार देखकर चेहरा ऐसा खिल उठा मानो दुनिया की सारी खुशी मिल गई हो। आश्चर्य से पूछा, "अरे जग्गू ... ! तुम ! कैसे हो भाई ?" आज इधर कैसे आना हुआ ?

"मैं ठीक हूं और तुम?" जग्गू ने पूछा। "हां मैं भी ठीक ही हूं, मेरा दिल तो बाग बाग हो गया मिलकर तुमसे, सच पूछो तो मैं बहुत खुश हुआ, फूलों की तरह।" अपने पुराने मजाकिया और शायराना अंदाज़ में चक्रधर ने उत्तर दिया।

टहलते हुए बातचीत के दौरान ही जग्गू ने कहा, "चलो कहीं आराम से बैठकर बातें करते हैं।"
"हाँ-हाँ चलो," चक्रधर ने हामी भरी। दोनों बातें करते करते पार्क में लगे कुर्सी पर जाकर बैठ गए।
"और सुनाओ भाई हमारी भाभी जी कैसी हैं ?" चक्रधर ने जवानी की यादों के उजाले में जाते हुए चुटकी लेते हुए बोला।

"हाँ वो भी ठीक ही है। वो भी साथ में आई है। उसकी तबीयत खराब रहने के कारण चलने फिरने में असमर्थ है, इसलिए वह टहलने के लिए नहीं आई हैं।" थोड़ा मायूस होकर जग्गू ने कहा।

पत्नी के बारे में बात करते करते जग्गू भावुक हो गया और उसकी आंखें भर आई। उसकी भावुकता को देखते हुए चक्रधर ने पूछा :-

"क्या हुआ ? कोई तकलीफ़ तो नहीं है न ?"

जग्गू ने अपने आपको संभालते हुए बोला-

"नहीं नहीं कुछ नहीं, किसी भी प्रकार की कोई तकलीफ़ नहीं है भाई, सब ठीक है।"

"कुछ छुपा रहे हो भाई, तुम्हारी आंखें बयां कर रही है।" चक्रधर ने कहा।

आंसू पोछते हुए जग्गू ने कहा -

"नहीं भाई कुछ नहीं, बस यूं हीं आंखें भर आई।"

जग्गू के चेहरे पर परेशानियां साफ झलक रही थी लेकिन उसके पारिवारिक जीवन की परेशानियों को ज्यादा न कुरेदने को उचित समझते हुए व्यक्तिगत जीवन से संबंधित बातों की ओर मुड़कर चक्रधर ने कहा।

"तुम तो दूज के चांद हो गए हो, गांव जाने के बाद तुम तो शहर आकर मिलना मुनासिब ही नहीं समझे।"

"अरे नहीं भाई, ऐसी कोई बात नहीं है। अब पहले वाली बात रही नहीं, शरीर में उतनी ताकत नहीं रह गई है कि पहले जैसा भाग दौड़ कर यहां वहां आते जाते रहे। अब शरीर में शिथिलता आ गई है। अब किसी चीज की जरूरत ही महसूस नहीं होती है सिवाय दो वक्त की रोटी की," जग्गू ने कहा।

"हाँ भाई बात तो सही ही कह रहे हो। अब हम लोगों को इस उम्र में और चाहिए ही क्या। प्रेम और शांति से दो वक्त की रोटी मिल जाए वही हम लोगों के लिए काफी है। भगवान की कृपा से बाल बच्चे को भी रोजी-रोटी मिल ही गया है।" चक्रधर ने बात को दोहराते हुए बोला।

चक्रधर का परिवार कई पीढ़ियों से शहर में ही रह रहा था और चक्रधर उसी शहर में एक सरकारी ऑफिस में नौकरी करता था। जग्गू भी गांव से शहर आकर सरकारी नौकरी के लिए उसी ऑफिस में योगदान दिया था जहां चक्रधर पहले से कार्यरत था। दोनों की पहली मुलाकात धीरे धीरे प्रगाढ़ दोस्ती में बदल गयी और दोनों के परिवार एक-दूसरे से इतने घुल मिल गए थे कि एक पारिवारिक सम्बन्ध हो गया था। जग्गू चक्रधर के घर के बगल में ही किराए के मकान में रहता था। कालांतर में उसी के आस पास अपना एक छोटा सा अपना घर भी ले लिया था। जग्गू को एक बेटा था जो उसी शहर में एक प्राइवेट कम्पनी में काम करता था। सरकारी नौकरी से सेवानिवृत्त होने के पश्चात जग्गू जीवन के बचे हुए पल को शहर के कौतूहल भरे भाग दौड़ की जिन्दगी से दूर गांव के शांत वातावरण में बिताना चाहता था। इसलिए बेटे की शादी विवाह करने के बाद घर और परिवारिक जिम्मेदारी सौंपते हुए वह अपनी पत्नी संग अपना पैतृक गांव हरदोई चला गया। वहां जाकर अपने पुश्तैनी घर की मरम्मत करा कर दोनों पति-पत्नी खुशी पूर्वक सुखमय जीवन व्यतीत करने लगे। घर के काम काज और जमीन जायदाद में व्यस्त रहने के साथ साथ व बचपन के दोस्तों के साथ बातचीत करते करते दिन भर का समय कैसे बीत जाता, पता ही नहीं चलता था। किसी भी प्रकार की कोई कमी और चिंता नहीं थी, गांव के लोगों के द्वारा भरपूर सहयोग एवं

प्यार मिलता था। लेकिन वर्षों से अच्छी तरह से चल रही घर गृहस्थी के बीच एक दिन उसकी पत्नी छत पर चढ़ने के क्रम में सीढ़ी पर से अचानक लुढ़क गई और डॉक्टर ने जवाब दे दिया कि अब यह कभी भी चल फिर नहीं सकती। उसके बाद से वह दिन भर बिछावन पर पड़ी पड़ी आकाश की ओर टकटकी लगाकर देखती रहती थी। पत्नी की तबियत खराब होने के बाद बेचारा जग्गू उसी के सेवा-सुश्रूषा में लगा रहता था। उसे जिन्दगी अब बोझ सी लगने लगी थी। पत्नी की दशा देखकर कभी कभी वह भावुक हो उठता था और आंखों से आंसू छलक पड़ते थे। कभी कभी अपनी पत्नी की असहनीय पीड़ा देखकर न रह पाने की स्थिति में ईश्वर को भी कोसने लगता था। एक पहिया रूपी हमसफ़र की तबियत खराब होने से गाड़ी रूपी जिन्दगी लड़खड़ाने लगी थी और जिन्दगी की रफ्तार धीमी महसूस होने लगी थी। दो वक्त की रोटी के लाले पड़ने लगे थे। बेचारा जग्गू न चाहते हुए भी घर और जमीन जायदाद का मोह माया त्यागकर, सगे संबंधी से दूर होते हुए अपने बेटे, बहू और पोते-पोतियों संग अपने हाथों से बसाये हुए उसी घर में रहने का फैसला कर शहर वापस आ गया था जहां जवानी के दिन बिताते हुए नौकरी किया करता था।

"और सुनाओ भाई दिन कैसा कट रहा है", चक्रधर ने पूछा।

“हां भाई और सब ठीक ही है। ईश्वर की कृपा से समय तो बहुत अच्छे से बीत रहा था लेकिन”...., कहते कहते जग्गू थोड़ा रूक गया।

"लेकिन क्या..?" चक्रधर बिना समय गंवाए उत्सुकता से पूछ बैठा।

दर्द और खुशियां भला छुपती कहां हैं, इंसान चाह कर भी अपने दर्द और खुशियां छुपा नहीं पाता और जग्गू अपना दुख बयां करने लगा- “लेकिन क्या कहें भाई विधाता को शायद हमारी खुशी देख कर अब बर्दाश्त नहीं हो रहा था और हमारी पत्नी को आजीवन अपाहिज बना दिया, उसके अपाहिज होने से हमें तो ऐसा महसूस होने लगा है कि मानो जैसे मैं हीं एक अंग से अपाहिज हो गया हूं।” जग्गू चिंतित भाव में सारी वृतांत सुनाने लगा।

"ओ हो बहुत बुरा हुआ, भाभी जी के साथ। भाभी जी अब कैसी हैं ?" चक्रधर ने पुन: पूछा।

“कैसी रहेंगी, बस बिछावन पर पड़ी-पड़ी बचे हुए दिन को रो रो कर काट रही है। अब मेरा भी ज्यादा समय उसी की देखभाल और सेवा सुश्रूषा में बीत रहा है। उसकी पीड़ा को देखकर लगता है ईश्वर जितना जल्दी हो उसकी जिंदगी में शाम ला दे।” जग्गू ने अपने कंधे पर रखे तौलिए से आंख की आंसू को पोंछेते हुए कहा।

“ईश्वर ने भाभी के साथ बहुत बुरा किया। कितनी अच्छी थी भाभी, उनकी हंसी ठिठोली और प्यार देखकर अपनापन महसूस होता था। वो जवानी का जमाना भी कितना अजीब था। जिन्दगी कितनी रंगीन हुआ करती थी,” चक्रधर बीते हुए यादों में खोकर कहता जा रहा था।

"हां चक्रधर भाई, ये ज़िन्दगी की भी अपनी एक अलग कहानी होती है, जीवन के संग्राम में न जाने कैसे-कैसे दु:ख झेलने पड़ते हैं और जिन्दगी के इस सफर में न जाने किस किस मोड़ से होकर गुजरना पड़ता हैं।" जग्गू ने कहते हुए अपनी बातों को जारी रखा.. "वो रंगीन दुनिया अब बदरंग लगने लगी है चक्रधर भाई और वो सारी हंसी और ख्वाब भी चूर होकर मरणासन्न अवस्था में पहुँच गये है। पत्नी की असहनीय पीड़ा देखकर मुझे ऐसा आभास होता है कि उसकी पीड़ा एक भयानक मौत से कहीं अधिक कष्टदायक है लेकिन क्या किया जा सकता है. जख्मों का दर्द दूसरों को तो बांटा नहीं जा सकता, उसे तो खुद ही सहना पड़ेगा।"

"हां भाई, बात तो सही हीं कह रहे हो। और सुनाओ, बेटा और बहू कैसे हैं ? मां की देख भाल और सेवा सुश्रूषा में हाथ बंटाते हैं या नहीं ?" चक्रधर ने पूछा।

"हां सब ठीक ही है, सब अपनी अपनी दुनिया में मस्त है। वह अपने घर परिवार की जिम्मेदारी निभाने और घर गृहस्थी में व्यस्त रहने के कारण कभी कभार थोड़ा बहुत हाथ बंटा दिया करता है। भाई-भाग दौड़ की इस जिन्दगी में पहले वाली बात अब रही कहां, जमाना बहुत बदल गया है, लोगों के रहन-सहन में बहुत बदलाव आ गया है। लोग आजकल पति पत्नी और अपने बाल बच्चे में हीं सिमट कर रह गए हैं। अब पहले वाला वो दौर तो रहा नहीं जब घर में संयुक्त परिवार हुआ करता था और लोग बड़े बुजुर्ग को देवता समान मानते हुए उनकी देखभाल और इज्जत किया करते थे, लोग उनकी बातों की कद्र करते थे और मन में एक डर के कारण घर के लोग उनसे सीधे मुंह बात तक नहीं किया करते थे। घर के आंगन में पोता पोती घनघोर मचाते हुए दादा - दादी संग खेला कूदा करते थे और दादा दादी भी अपने पोते पोतियों को लोरियां और कहानिया सुनाया करते थे।" जग्गू बोलता जा रहा था तभी चक्रधर बीच में बोल पड़ा-

"हां जग्गू भाई, जमाना तो काफी बदल ही गया है, परिवार में अब पहले वाली वो बात तो रही ही नहीं जो हमलोगों के समय हुआ करती थी।"

"और भाई, तुम्हरे बाल बच्चे कैसे हैं और हाँ, अपना दुख दर्द बताते बताते तो भाभी जी के बारे में मैं पृछना ही भूल गया, भाभी जी कैसी है ? ठीक हैं न ?" जग्गू ने पूछा।

"हां सब कुशल मंगल से है।" चक्रधर ने बोला।

दोनों बातचीत में इतना मसगूल हो गए थे कि मानो वर्षों का बिछड़ा प्यार और दु:ख दर्द एक ही दिन में कह कर एक दूजे से बांट लेना चाहते हों। बात चीत में दोनों को समय का ख्याल ही नही रहा। तभी जग्गू की नजर अचानक अपनी कलाई पर बंधी घड़ी पर पड़ी।

"भाई 9 बज गए हैं, अब हमें चलना चाहिए, तुम्हारी भाभी इंतज़ार कर रही होगी उसे नास्ता कराकर दवा खिलानी है।" जग्गू कहते हुए खड़ा हो गया।

"हां हां ठीक है. चलो, बाकी बातें कल करते है। अब तो रोज मिलना-जुलना लगा ही रहेगा। कल ठीक सुबह 6 बजे आ जाना," कहते हुए चक्रधर जग्गू के साथ पार्क से बाहर निकल गया।

"हां हां ठीक है, आ जाऊंगा," कहते हुए जग्गू अपने घर की ओर मुड़ गया और देखते ही देखते दोनों एक-दूसरे की आंखों से ओझल हो गए।

★★★★★

बीबी का मक़बरा

सुश्री श्रीलता एस.एम.
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

बीबी के मक़बरे का निर्माण मुग़ल बादशाह औरंगजेब ने, अंतिम सत्रहवीं शताब्दी में करवाया था। इतिहासकारों के अनुसार इस मक़बरे का निर्माण मुग़ल बादशाह औरंगज़ेब के पुत्र आज़म शाह ने अपनी माँ दिलरस बानो बेगम की याद में बनवाया था। इन्हें राबिया-उद-दौरानी के नाम से भी जाना जाता था। यह ताज महल की आकृति पर बनवाया गया था। यह औरंगाबाद, महाराष्ट्र में स्थित है। यह मक़बरा अकबर एवं शाहजहाँ के काल के शाही निर्माण से अंतिम मुग़लों के साधारण वास्तुकला के परिवर्तन को दर्शाता है। ताजमहल से तुलना के कारण ही यह उपेक्षा का कारण बना रहा। मुग़ल काल के दौरान यह वास्तु औरंगाबाद शहर का मध्य हुआ करता था। इस मकबरे को ताज महल की फूहड़ नकल भी कहा जाता है। जो कि औरंगजेब की वास्तुकला को दर्शाता है।

अनुमान किया जाता है कि इसका निर्माण 1657 -1661 ई के मध्यकाल में हुआ। ग़ुलाम मुस्तफा की रचना "तारीख नाम" के अनुसार इसके निर्माण का व्यय 6,68,203.7 रुपये हुआ था। यह वास्तू कुल 25 एकड़ मे फैली हुई है। जिसमें मुख्य गुम्बद और चार मिनार 3094 वर्ग मीटर मे फैली हुई है। इस मक़बरे का गुम्बद पूरी तरह संगमरमर के पत्थर से बना हुआ है। गुम्बद के अलावा दूसरा निर्माण प्लास्टर से किया गया है। इस वास्तु के निर्माण के लिए लगनेवाले पत्थर जयपुर की खदानों से लाये गए थे।

आज़म शाह इसे "ताजमहल" से भी ज्यादा भव्य बनाना चाहता था परंतु बादशाह औरंगज़ेब द्वारा दिए गए खर्च में वह मुमकिन नहीं हो पाया।

इस मक़बरे का डिज़ाइन अतउल्लाह द्वारा किया गया था। अतउल्लाह के पिताजी उस्ताद अहमद लाहोरी को विश्वप्रसिद्ध "ताजमहल" के मुख्य आर्किटेक्ट के तौर पर पहचाना जाता था। इस मक़बरे का गुम्बद ताजमहल के गुम्बद से आकार में छोटा है। तकनिकी खामियों के कारण और संगमरमर की कमतरता के कारण यह वास्तु कभी भी "ताजमहल" के बराबर नहीं समझी गयी। इस मकबरे को दक्खन का ताजमहल कहा जाता है।

★★★★★

ऑडिट दिवस पर पुरस्कार प्राप्त करते हुए प्रतिभागीगण

हिंदी पखवाडा समारोह की विभिन्न प्रतियोगिताओं की झलकियाँ

मौखिक प्रतिभा प्रदर्शन प्रतियोगिता

निबंध लेखन प्रतियोगिता

टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता

ज्ञान प्रश्नोतरी प्रतियोगिता

गीत गायन प्रतियोगिता

अंताक्षरी प्रतियोगिता

हिंदी पखवाडा समापन समारोह की झलकियाँ